CMYK

RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

वर्ष-10 अंक: 149 ता. 06 दिसम्बर 2021, सोमवार, कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

एनसीपीईडीपी ने लांच किया 'मिसिंग मिलियंस' कैंपेन, लाखों दिव्यांगजनों की आवाज होगी बुलंद

इस कैंपेन के लिए एनसीपीईडीपी को बधाई दी। सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति श्रीपति रविंद्र भट्ट ने कैंपेन को लांच किया।

National Centre for Promotion of Employment for Disabled People
NCPEDP

नई दिल्ली। नेशनल सेंटर फोर प्रमोशन ऑफ एंप्लॉयमेंट फोर डिसैबल्ड पीपल (एनसीपीईडीपी) ने इंटरनेशनल डे ऑफ पर्सन्स विद डिसैबिलिटीज के अवसर पर 'मिसिंग मिलियंस कैंपेन' लांच किया। कैंपेन का लक्ष्य मुख्यधारा से कटे लाखों दिव्यांगजनों की आवाज को बुलंद करना है ताकि जीवन के सभी क्षेत्रों में उनकी सक्रिय भागीदारी हो सके। कांस्टीट्यूनशल क्लब ऑफ इंडिया में शुक्रवार को आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत यूनेस्को नई दिल्ली के निदेशक एरिक फाल्ट के वीडियो संदेश से हुई। उन्होंने इस कैंपेन के लिए एनसीपीईडीपी को बधाई दी। सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति श्रीपति रविंद्र भट्ट ने कैंपेन को लांच किया। इस दौरान 'जिसकी गिनती नहीं होती है, उसे गिना भी नहीं जाता है' पर फोकस वीडियो भी दिखाया गया। उन्होंने कहा, यह महत्वपूर्ण है कि सामान्य लोग दिव्यांगजनों की जरूरतों पर नीतियों के निर्माण के समय उन्हें प्रमुख साझीदार मानकर उनके साथ टेबल साझा करें। कैंपेन लांच के बाद दिव्यांगजनों की चुनौतियों और आगे के मार्ग पर दो पैनल चर्चाएं हुई जिनमें कई प्रभावशाली वक्ताओं ने हिस्सा लिया। इस मौके पर वीआर फेरोस की किताब इनविजिबल मेजोरिटी किताब को सांसद गौरव गोगोई ने लांच किया।

उग्रवादी समझकर सुरक्षाबलों ने की फायरिंग

छह नागरिकों की मौत, नगालैंड में भड़के लोगों ने की आगजनी-तोड़फोड़, इलाके में तनाव

नगालैंड। नगालैंड में एक बड़ी घटना सामने आई है। यहां के मोन जिले में सुरक्षाबलों की ओर से की गई फायरिंग में छह से ज्यादा आम लोगों की मौत होने की सूचना सामने आ रही है। ओटिंग इलाके में शनिवार शाम हुई इस घटना के बाद इलाके में तनावपूर्ण स्थिति है। गुस्साए लोगों ने सुरक्षाबलों की गाड़ियों को आग लगा दी।

बताया जा रहा है कि पीड़ित मजदूर थे और काम के बाद एक पिकअप में बैठकर अपने घर जा रहे थे। जब देर रात तक वे अपने घर नहीं पहुंचे तो ग्रामीणों ने उन्हें ढूंढना शुरू किया और तब उनके परिजनों को इस घटना की जानकारी हुई।

आईपीएस ने ट्वीट करके फिर किया डिलीट

इस घटना को लेकर देर रात तक प्रशासन की तरफ से कोई पुष्टि नहीं की गई। हालांकि राज्य के सीएम के ट्वीट के बाद घटना की जानकारी सार्वजनिक हो सकी। सीएम के ट्वीट से पहले आईपीएस अधिकारी रूपिन शर्मा ने ट्विटर पर इस घटना का एक वीडियो शेयर किया था। उन्होंने लिखा था कि ओटिंग गांव में सुरक्षाबलों की फायरिंग में कई नागरिकों के मौत की खबर है। हालांकि कुछ देर बाद उन्होंने यह वीडियो डिलीट कर दिया।

उग्रवादियों के होने की मिली जानकारी

इस घटना पर कहा जा रहा है कि सिक्योरिटी फोर्सेस को इनपुट मिला था कि उस जगह पर उग्रवादी संगठन NSCN के लोग होंगे और वहां किसी

घटना को अंजाम दे सकते हैं। इसलिए ऑपरेशन प्लान किया गया।

रोकने पर नहीं रुकी गाड़ी तो सुरक्षाबलों ने की फायरिंग

इनपुट में जिस रंग की गाड़ी के बारे में बताया गया था उसी रंग की गाड़ी वहां से गुजरी। सिक्योरिटी फोर्स के लोगों ने उसे रुकने को कहा लेकिन वह गाड़ी नहीं रुकी। इसके बाद सिक्योरिटी फोर्स ने फायरिंग कर दी। बाद में जाकर देखा तो पता चला कि वे सिविलियंस हैं। इसमें करीब 6 सिविलियंस मारे गए।

एक जवान की भी हुई मौत

सूत्रों के मुताबिक इसी बीच गांव वाले उस जगह पर आ गए और सिक्योरिटी फोर्स के लोगों से हथियार छीनने लगे और गाड़ी में भी आग लगी दी। फिर फायरिंग हुई और यहां भी कुछ सिविलियंस के मारे जाने की सूचना है। सिक्योरिटी फोर्स का एक जवान भी इसमें मारा गया।

सीएम नेफियो रियो ने जांच कराने की कही बात

सीएम नेफियो रियो ने ट्वीटकरके घटना पर दुख जाहिर किया है। उन्होंने लिखा कि ओटिंग, मोन में नागरिकों की हत्या की दुर्भाग्यपूर्ण घटना अत्यंत निंदनीय है। उच्च स्तरीय एसआईटी जांच करेगी और देश के कानून के अनुसार न्याय दिलाएगी। सभी वर्गों से शांति की अपील है।

इस घटना पर गृहमंत्री अमित शाह ने भी ट्वीट किया। उन्होंने लिखा, नगालैंड के ओटिंग में दुर्भाग्यपूर्ण घटना से व्यथित हूं। मैं उन लोगों के परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं जिन्होंने अपनी जान गंवाई है। राज्य सरकार की ओर से गठित एक उच्च स्तरीय एसआईटी शोक संतप्त परिवारों को न्याय सुनिश्चित करने के लिए घटना की गहन जांच करेगी।

बच्चों को जैवलिन थ्रो के गुर सिखा रहे नीरज

पीएम मोदी ने की तारीफ, बोले- यह वीडियो आपको खुश कर देगा

अहमदाबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को टोक्यो ओलंपिक के स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा की जमकर सराहना की। दरअसल, नीरज अहमदाबाद के संस्कारधाम स्कूल में बच्चों को जैवलिन सिखाते नजर आए। ओलंपिक चैंपियन के इस कार्य को देख पीएम मोदी गदगद हो उठे। उन्होंने एक के बाद एक ट्वीट कर नीरज चोपड़ा की जमकर तारीफ की और इसे एक खास क्षण बताया। प्रधानमंत्री ने नीरज का एक वीडियो भी शेयर किया है, जिसमें वो बच्चों को जैवलिन थ्रो के गुर सिखाते हुए नजर आ रहे हैं।

पीएम मोदी ने ट्वीट कर लिखा, युवा छात्रों के बीच जाने और उन्हें खेल और फिटनेस के लिए प्रेरित करने के लिए नीरज चोपड़ा द्वारा यह एक शानदार पहल है। इस तरह के प्रयासों से खेल और अभ्यास के प्रति उत्सुकता बढ़ेगी। पीएम मोदी ने लिखा, यह वीडियो आपको खुश कर देगा। पीएम ने आगे कि आइए हम अपने युवाओं को खेल के मैदान पर शानदार प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करते रहे।

मालूम हो कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 16 अगस्त को अपने आवास पर टोक्यो ओलंपियन के

साथ मुलाकात की थी. इस दौरान उन्होंने भारतीय ओलंपियन और पैरालंपियन से अपील की थी कि उनमें से प्रत्येक 2023 में स्वतंत्रता दिवस से पहले 75 स्कूलों का दौरा करें और कुपोषण के खिलाफ जागरूकता फैलाएं और स्कूली बच्चों के साथ खेलें।

40+ को बूस्टर डोज की वकालत के बाद अब पीछे हटे टॉप वैज्ञानिक, कहा-भारत के लिए नहीं था सुझाव

नई दिल्ली। ओमिक्रॉन वैरिएंट के खतरे और वैक्सीन की बूस्टर डोज के लिए बढ़ती मांग के बीच देश की टॉप जीनोम सिक्वेंसिंग बॉडी शनिवार को अपने उस बयान से पीछे हट गई है, जिसमें उसने 40 साल से अधिक आयु वाले लोगों को बूस्टर खुराक दिए जाने की सिफारिश की थी। अब नए बुलेटिन में यह कहा गया है कि फिलहाल बूस्टर डोज के असर का पता लगाने के लिए और भी वैज्ञानिक शोध किए जाने की जरूरत है। अपने ताजा हेल्थ बुलेटिन में भारत के सार्स-कोव-2 कंजोर्टियम ऑन जीनोमिक्स ने कहा है कि बूस्टर डोज का जिक्र ज्यादा जोखिम वाली आबादी में वैक्सीन की अतिरिक्त खुराक की संभावित भूमिका को लेकर एक चर्चा भर थी और यह सुझाव भारत के टीकाकरण अभियान से जुड़ा नहीं था। इससे पहले 29 नवंबर को INSACOG ने अपने हेल्थ बुलेटिन में कहा था कि 40 साल या उससे अधिक उम्र वाले लोगों के लिए बूस्टर डोज पर विचार किया जा सकता है। हालांकि, अब INSACOG ने कहा है कि बूस्टर डोज के प्रभावों के आंकलन के लिए

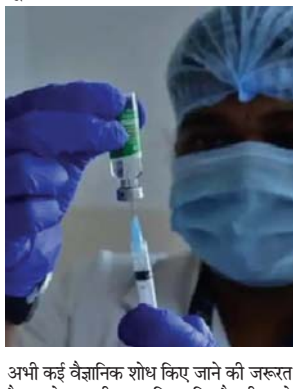

अभी कई वैज्ञानिक शोध किए जाने की जरूरत है। इसने यह भी स्पष्ट किया कि वैक्सीन को लेकर सुझाव देने, उसे अमल में लाने का काम NTGAI (नेशनल टेक्निकल एडवाइजरी ग्रुप ऑन इम्यूनाइजेशन) और NEGVAC (नेशनल एक्सपर्ट ग्रुप ऑन वैक्सीन एडमिनिस्ट्रेशन फॉर कोविड-19) के अंदर आता है। बता दें कि INSACOG का यह बयान स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया की तरफ से लोकसभा में दिए उस बयान के एक दिन बाद ही आया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि बूस्टर खुराकों और बच्चों के लिए वैक्सीन पर फैसला वैज्ञानिक सलाह के आधार पर ही लिया जाएगा। उन्होंने कहा था कि टीकाकरण का लक्ष्य वैक्सीन की दूसरी डोज ज्यादा से ज्यादा लोगों को देना है। बता दें कि NTGAI अगले हफ्ते बूस्टर खुराक को लेकर बैठक कर सकता है। नीति आयोग के सदस्य डॉक्टर वीके पॉल ने हाल ही में कहा कि भले ही ओमिक्रॉन वैरिएंट नई चुनौती है लेकिन अभी भी कोरोना के खिलाफ जंग का सबसे अहम हथियार वैक्सीन की दोनों डोज लेना ही है।

वायु प्रदूषण से दिल्ली-एनसीआर बेहाल, यूपी-हरियाणा और बिहार में भी AQI गंभीर श्रेणी में कायम

● बावजूद इसके आज भी दिल्ली-एनसीआर की आबोहवा दूषित बनी हुई है। एक्यूआई गंभीर श्रेणी में बना हुआ है। एक्यूआई 385 तक पहुंच गया है। सिस्टम ऑफ एयर क्वालिटी एंड वेदर फोरकास्टिंग एंड रिसर्च के अनुसार, दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक आज 385 पर रहा।

नई दिल्ली। दिल्ली में वायु प्रदूषण कम होने का नाम नहीं ले रहा है। लगातार एक्यूआई के स्तर में उतार-चढ़ाव जारी है। भले ही बीते दिन दिल्ली में हल्की बूंदाबांदी हुई, लेकिन वायु प्रदूषण में मामूली सुधार ही दर्ज किया गया। बावजूद इसके आज भी दिल्ली-एनसीआर की आबोहवा दूषित बनी हुई है। एक्यूआई गंभीर श्रेणी में बना हुआ है। एक्यूआई 385 तक पहुंच गया है। सिस्टम ऑफ एयर क्वालिटी एंड वेदर फोरकास्टिंग एंड रिसर्च के अनुसार, दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक आज 385 पर रहा। वहीं यूपी, बिहार और हरियाणा के कई क्षेत्रों में प्रदूषण से स्थिति बिगड़ी हुई है। तो आइए जानते हैं कि किन क्षेत्रों में एक्यूआई का स्तर गंभीर श्रेणी में पहुंचा। आनंद विहार में एक्यूआई (408) आइटीओ में (288) आरेकम पुरम में (315) पटपड़गंज में (310) दर्ज किया है। चांदनी चौक में 322 और सिरिफोर्ट में 273 एक्यूआई दर्ज किया गया है।

कमजोर पड़ा चक्रवाती तूफान जवाद, पुरी में तेज हवाओं के साथ हो रही बारिश

नई दिल्ली। बंगाल की खाड़ी में बना चक्रवात जवाद धीरे-धीरे कमजोर हो रहा है। मौसम विभाग के अनुसार, चक्रवात अभी तीन से चार किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चल रहा है। ऐसे में तट से टकराने के बाद यह ज्यादा तबाही नहीं मचाएगा। चक्रवाती तूफान के कारण पुरी में बारिश शुरू हो गई है। हालांकि तूफान के कमजोर पड़ने से नुकसान की संभावना कम है लेकिन मौसम विभाग ने इसे लेकर अलर्ट जारी किया है। इससे पहले शनिवार को भी ओडिशा, आंध्र प्रदेश और बंगाल के तटवर्ती इलाकों में दिन भर रुक-रुक कर बारिश होती रही और आसमान में बादल छाए रहे। विभाग ने रविवार को भी इन इलाकों में बारिश की संभावना जताई

है। बदले मौसम से तापमान में भी गिरावट आई है। चक्रवात के अब रविवार दोपहर में पुरी तट से टकराने की उम्मीद है। सतह से टकराते समय हवा की अधिकतम गति 60 से 70 किमी प्रति घंटे तक हो सकती है। मौसम विभाग के अनुसार, चक्रवात समुद्र के अंदर कमजोर होकर उत्तर, उत्तर पश्चिम दिशा की तरफ गति कर रहा है। कम दबाव के प्रभाव से कुछ जिलों में भारी बारिश होगी। उधर, तूफान के कमजोर होने की खबर मिलते ही पुरी में समुद्र के किनारे विभिन्न होटलों में रह रहे पर्यटक समुद्र में नहाने तथा मौज मस्ती करने के लिए सी बीच पर पहुंच गए। प्रशासन ने रेड अलर्ट जारी करते हुए उन्हें हटाया। मौसम वैज्ञानिक उमाशंकर दास ने बताया कि जवाद के प्रभाव से पारादीप में सर्वाधिक बारिश 68 मिमी, पुरी में 45 मिमी, भुवनेश्वर में 10 मिमी बारिश हुई है। इसके अलावा पूरे प्रदेश में बारिश का दौर जारी है। शनिवार सुबह से पुरी जिले में सर्वाधिक 26 किमी प्रति घंटा और पारादीप में 10 किमी प्रतिघंटा और गोपालपुर में 15 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चल रही हैं। समय के साथ तटीय जिलों में हवा की गति बढ़ेगी।

बिहार के युवाओं को नशे में डुबो रहा बंगाल का ब्राउन शुगर, दो दर्जन से ज्यादा तस्कर अरेस्ट, इस कोडवर्ड से चलता है धंधा

भागलपुर। बंगाल के ब्राउन शुगर से शहर के युवा नशे की चपेट में आ रहे हैं। हाल के महीनों में ब्राउन शुगर के साथ कई तस्करों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। दो दर्जन से ज्यादा तस्करों और पेडलर को जेल भेजा जा चुका है। पुलिस की गिरफ्त में आये उन तस्करों में ज्यादातर ने पूछताछ में बताया कि वे नशीले पदार्थ की खेप बंगाल से लाते हैं और यहां छोटी पुड़िया बनाकर बेची जाती है। पहले शराब और अब ब्राउन शुगर की खेप बंगाल से शहर पहुंच रही है जो पुलिस के लिए सिरदर्द बन गया है।

पॉकेट में लेकर अड्डे पर बेचने पहुंचते हैं, बीएस के नाम से होती है मांग

हाल के महीनों में पकड़े गये ब्राउन शुगर के तस्करों ने पूछताछ में बताया है कि बंगाल से इसकी बड़ी खेप मंगवाकर यहां अलग-अलग इलाकों में उसका वितरण किया जा रहा। उसके बाद इस अवैध कारोबार से जुड़े लोग अपने पॉकेट में ब्राउन शुगर की पुड़िया लेकर घूम-घूम कर बेचते हैं।

कुछ अड्डों को भी चिह्नित किया गया है, जहां नशा करने वाले शाम होते ही पहुंच जाते हैं। पुड़िया बेचने वाले वहां पहुंचते हैं और बीएस बोलते ही लोग पैसे देकर पुड़िया ले लेते हैं। भीखनपुर, हवाई अड्डा, बागबाड़ी, अलीगंज, बरारी आदि इलाकों में उन नशेड़ियों का अड्डा लगता है। ब्राउन शुगर की एक पुड़िया तीन सौ रुपये में बेची जा रही है।

ब्राउन शुगर के साथ यहां से पकड़े गये- सबौर थाना क्षेत्र के सुल्तानपुर भिट्ठी व चंदेरी से पुलिस ने 28 नवंबर को 10 पुड़िया ब्राउन शुगर के साथ मो. अरशद, किशन चौधरी, नितेश यादव, सुमित यादव और अभिषेक यादव को गिरफ्तार किया।

- छह सितंबर हबीबपुर पुलिस ने नौ पुड़िया ब्राउन शुगर के साथ भैरोपुर के रहने वाले कैलाश मंडल को गिरफ्तार किया। उसने बताया कि वह घूम-घूम कर पुड़िया बेच रहा था।

- पांच जून को जोगसर पुलिस ने 33 ब्रॉउन शुगर के साथ श्यामा सूरी, किशन महतो और धर्मेंद्र सूरी गिरफ्तार किया था। पूछताछ में उन्होंने अपने अन्य साथियों के भी नाम बताये थे।

- 22 जनवरी को जिला स्कूल परिसर में ब्राउन सुगर बेचते दो युवकों को पुलिस ने गिरफ्तार किया था। पुलिस ने मशाकचक निवासी रवि कुमार और राजीव कुमार को पकड़ा था।

- 23 जनवरी को जीरोमाइल से दो तस्करों नवगछिया के गोसाईंगांव निवासी नीरज कुमार और जगतपुर निवासी बादल कुमार को पुलिस ने गिरफ्तार किया था।

- आठ फरवरी को आठ फरवरी बरारी और जोगसर पुलिस ने ब्राउन शुगर के साथ सोनू कुमार मंडल और जोगसर पुलिस ने दीपनगर से एक पुडिया साथ गिरफ्तार किया था।

- जोगसर पुलिस ने जेल से छूटे आदमपुर घाट रोड के प्रशांत वत्स को 14 दिसंबर, 2019 को ब्राउन शुगर की पुड़िया के साथ गिरफ्तार किया था। वह पहले भी नशीला पदार्थ बेचने के आरोप में जेल जा चुका था

शराब की तस्करी और अपराधियों के छिपने का अड्डा भी बना बंगाल और झारखंड

ब्राउन शुगर ही नहीं, शराब की तस्करी भी बंगाल और झारखंड से हो रही है। झारखंड और बंगाल से आई शराब की बड़ी खेप जीरोमाइल, तिलकामांझी पुलिस के अलावा उत्पाद विभाग की टीम पकड़ चुकी है। इसके अलावा जिले के कुख्यात के लिए बंगाल और झारखंड सेफ जोन भी बन रहा।

भागलपुर जिले का मोस्ट वांटेड अजय मिश्रा और सत्तन यादव को पुलिस ने झारखंड से गिरफ्तार किया था। अजय मिश्रा को जमशेदपुर से जबकि सत्तन यादव को गोड्डा से दबोचा गया था। दक्षिणी क्षेत्र का कुख्यात टिंकू मियां अपने साथियों संग कोलकाता के मटियाबुर्ज में छिपा हुआ है।

एसपी सिटी स्वर्ण प्रभात ने कहा, %शराब और ब्राउन शुगर के अलावा अन्य नशीले पदार्थों को लेकर थानाध्यक्षों को निर्देश दिया जा चुका है। बरामदगी भी हो रही है

सार समाचार

प्रदूषण से निपटने के लिए और अधिक एंटी-स्मॉग गन तैनात करेगी दिल्ली मेट्रो

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में प्रदूषण की समस्या लगातार बढ़ती ही जा रही है, जिसको देखते हुए दिल्ली मेट्रो ने अपने परियोजना स्थलों पर और अधिक एंटी-स्मॉग गन लगाने की योजना बनाई है। दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) के अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। दिल्ली मेट्रो ने अपने निर्माण स्थलों पर प्रदूषण को कम करने के लिए पहले से ही 14 एंटी-स्मॉग गन को तैनात कियाहै जो निर्माण कार्य से निकलने वाले धूल के कणों के प्रदूषण को कम करने के लिए नियमित अंतराल पर अच्छी धुंध फेंकती हैं। ये एंटी-स्मॉग गन (एएसजी) पहले भी कुछ समय के लिए लगाई गई थीं। दिल्ली और उसके आस-पास के शहरों में प्रदूषण के बढ़ते स्तर को देखते हुए अधिकारियों के निर्देश पर राष्ट्रीय राजधानी में फिलहाल निर्माण गतिविधियां रोक दी गई हैं। डीएमआरसी के कॉरपोरेट संचार के कार्यकारी निदेशक अनुज दयाल ने कहा, ''वर्तमान में, गैर-प्रदूषणकारी प्रकृति के निर्माण कार्यों के अलावा सभी प्रकार के निर्माण कार्यों कोनिर्देशों के अनुपालन में रोक दिया गया है।'' उन्होंने कहा, ''जबकि डीएमआरसी समय-समय पर जारी किए जा रहे प्रदूषण संबंधी सभी निर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित कर रहा है, यह एंटी स्मॉग गन प्रदूषण से निपटने के लिए एक स्थायी उपाय के रूप में स्थापित की गई हैं और साल भर निर्माणस्थलों पर कार्यरत रहती हैं।

शिवसेना ने दिया ममता को झटका, कहा- कांग्रेस को साथ लिए बिना नहीं बन सकता कोई तीसरा मोर्चा

हाल ही में ममता बनर्जी अपने मुंबई दौरे थीं। यहां उन्होंने बॉलीवुड जगत से लेकर सियासी जगत के लोगों से मुलाकात की। इसी दौरे के दौरान शरद पवार से मुलाकात में ममता बनर्जी ने कह दिया था कि यूपी अब खत्म हो चुका है। ममता बनर्जी एक तरफ जहां कांग्रेस के साथ फिलहाल चलने को राजी नहीं दिखती। दूसरी ओर शिवसेना ने भी ममता बनर्जी को झटका दे दिया है।

शिवसेना ने यूपीए से अलग मोर्चा बनाने को लेकर ममता बनर्जी को इनकार कर दिया है। ममता चाहती थी कि यूपी के अलावा भी क्षेत्रीय दलों का एक अलग मोर्चा बने। इसी को लेकर संजय रावत का एक बयान भी आया है। शिवसेना नेता संजय राउत ने कहा है कि कांग्रेस को साथ लिए बिना कोई तीसरा मोर्चा बना पाना असंभव है। अगर यह मोर्चाबंदी गया तो किसी काम का नहीं होगा। यह मोर्चा सिर्फ वोटों का बंटवारा करेगा। इस वक्त यूपीए को मजबूत करने की जरूरत है। इसके लिए मिलकर बातचीत करनी होगी। यूपीए के चेयरपर्सन सोनिया गांधी के नेतृत्व पर किसी ने सवाल नहीं उठाया है।

सामना के जरिए ममता पर निशाना

शिवसेना ने अपने मुखपत्र सामना में इशारो इशारो में ममता बनर्जी पर निशाना साधा है। सामना में लिखा गया कांग्रेस को दूर रख कर राष्ट्रीय राजनीति करना मौजूदा तानाशाही के राज को बल देने जैसा है।

कांग्रेस खत्म यह सोचना गंभीर खतरा है

सामना में लिखा है कि कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो ऐसा बीजेपी माने तो इस बात को समझा जा सकता है। लेकिन मोदी के विरोध में लड़ने वाले लोगों की सोच कि कांग्रेस खत्म है। यह सोचना एक गंभीर खतरा है।

गोवा चुनाव से पहले, कांग्रेस ने स्थानीय लोगों के भूमि अधिकारों के लिए कानून का वादा किया

पणजी। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने कहा है कि उनकी पार्टी यदि गोवा में सरकार में आती है तो स्थानीय लोगों के भूमि अधिकारों के संरक्षण के लिए कानून लाएगी। चिदंबरम ने वालपोई विधानसभा क्षेत्र में शनिवार को पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस कानूनी तरीकों से राज्य में लौह अयस्क का खनन पुनः शुरू करेगी। वालपोई से इस समय भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता विश्वजीत राणे विधायक हैं जो गोवा के स्वास्थ्य मंत्री हैं। चिदंबरम अगले साल गोवा में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी के वरिष्ठ चुनाव पर्यवेक्षक हैं। उन्होंने भूमि अधिकारों के लिए स्थानीय लोगों, विशेष रूप से आदिवासियों के प्रदर्शनों का जिक्र करते हुए कहा, ''मैं देशभर में भूमि कानूनों को जानता हूं। गोवा में कानून बनाने की गुंजाइश है।'' चिदंबरम ने कहा कांग्रेस जमीन के संदर्भ में काश्तकारों को संरक्षण प्रदान करने के लिए कानून बनाएगी। उन्होंने कहा, ''इसे काश्तकारी अधिकार संरक्षण अधिनियम कहा जाता है। काश्तकार जमीन पर पैदावार कर सकता है और उसके बाद, उसका परिवार खेती करता रह सकता है। भारत में ऐसा कानून है। गोवा में इस तरह का कानून लागू किया जाएगा।'' गोवा में खनन एक समय राजस्व का प्रमुख स्रोत होता था और 2018 में उच्चतम न्यायालय के एक आदेश के बाद से यह रुका हुआ है। चिदंबरम ने इस विषय पर कहा कि खनन बहाल करने का एक कानूनी रास्ता है। उन्होंने विस्तार से जानकारी नहीं दी, लेकिन कहा, ''कांग्रेस की सरकार बनती है तो कानूनी तरीके से खनन पुनः शुरू किया जाएगा।''

संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए स्वतंत्र, सशक्त व निष्पक्ष न्यायपालिका जरूरी: गहलोत

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने न्यायपालिका को संविधान की रक्षक बताते हुए रविवार को कहा कि संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए देश की न्यायपालिका का निष्पक्ष, सशक्त और स्वतंत्र होना जरूरी है। वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जोधपुर में बार काउन्सिल ऑफ राजस्थान के नवनिर्मित अधिवक्ता भवन के लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए रविवार को गहलोत ने कहा कि कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका, तीनों ही संवैधानिक जिम्मेदारी से बंधे हुए हैं और इनमें से एक भी कड़ी कमजोर होती है तो लोकतंत्र कमजोर होता है। अदालतों में लंबित मुकदमों की संख्या और न्यायाधीशों की रिक्तियों पर चिंता जताते हुए गहलोत ने कहा कि न्याय में देरी, न्याय नहीं मिलने के समान है और इसके समाधान पर राष्ट्रीय स्तर पर चिंतन होना चाहिए। पिछले कुछ साल में न्यायपालिका के समक्ष आयी चुनौतियों पर चिंता जताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, ''यह सर्वोच्च सम्मान और गरिमा से जुड़ी सेवा है। इस पर किसी भी तरह की आंच आना उचित नहीं है।'' उन्होंने कहा, ''हमारी न्यायपालिका संविधान की रक्षक है और संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए न्यायपालिका का निष्पक्ष, सशक्त और स्वतंत्र रहना जरूरी है।'' पीड़ितों को सरलता से और समय पर न्याय दिलाने में अधिवक्ताओं की भूमिका इस जिक्र करते हुए उन्होंने कहा,''अधिवक्ता समाज की अहम कड़ी के रूप में अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए न्याय के मौलिक अधिकार की अवधारणा को और मजबूत करें।''

कांग्रेस पर बरसे अमित शाह, कहा- गहलोत सरकार भ्रष्टाचारी और निकम्मी, 2023 में खिलेगा कमल

जयपुर (एजेंसी)।

केंद्रीय गृह मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता अमित शाह राजस्थान दौरे पर है। अपने इस दौरे के दौरान अमित शाह ने भाजपा के जनप्रतिनिधि संकल्प महासम्मेलन को संबोधित किया। अपने संबोधन में अमित शाह ने जहां राजस्थान की मिट्टी की तारीफ की तो वही गहलोत सरकार पर जमकर निशाना साधा। अमित शाह ने कहा कि राजस्थान की धरती की मिट्टी में ही कुछ ऐसा है कि यहां जो पैदा होता है वो देश की आन, बान और शान के लिए जीना और मरना दोनों जानता है। इसके साथ ही शाह ने कहा कि मैं राजस्थान की जनता से आह्वान करने आया हूं कि यहां की निकम्मी और भ्रष्टाचारी अशोक गहलोत सरकार को मूल समेत उखाड़कर फेक देना है और भाजपा के कमल के निशान वाली सरकार बनाना है।

अमित शाह ने कहा कि इंदिरा जी ने 70 के दशक में गरीबी हटाओ का नारा दिया था। जब 2014 में नरेंद्र मोदी आए तब भी गरीबों के पास घर नहीं था, बिजली नहीं थी, करोड़ों माताओं-बहनों के पास गैस कनेक्शन नहीं था, गरीबों के पास शौचालय की व्यवस्था नहीं थी। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कांग्रेस के नेता सुन लें, 'आपने गरीबी हटाने की जगह, गरीब हटाओ का काम किया था।' गरीबी हटाने का काम 2014 के बाद पूर्ण बहुमत की नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने किया। शाह ने कहा कि सात वर्ष बाद मैं आज कह सकता हूं कि हर गांव में बिजली, हर घर में बिजली पहुंचाने का काम मोदी सरकार ने किया। 11 करोड़ से ज्यादा घरों में शौचालय बनाने का काम मोदी सरकार ने किया। 2 करोड़ से ज्यादा गरीबों के लिए घर बनाएं, 13 करोड़ घरों में गैस कनेक्शन दिया।

अमित साह ने कहा कि मोदी ने पूरे देश में पेट्रोल-डीजल पर वैट घटाया, देश में भाजपा शासित राज्य सरकारों ने भी वैट घटाने का काम किया। लेकिन राजस्थान एक ऐसा राज्य है जिसने पेट्रोल-डीजल पर वैट नहीं घटाया है। उन्होंने कहा कि जब भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनी तब राजस्थान की वीर भूमि ने नरेंद्र मोदी को 25 में से 25 सीटें देने का काम किया। 2019 में जब भाजपा 300 पार गई तब भी 25 में से 23 सीटें देने का काम मेरे राजस्थान के लोगों, कार्यकर्ताओं ने किया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि भाजपा आगामी विधानसभा चुनाव में राजस्थान में दो तिहाई बहुमत से सरकार बनाएगी। उन्होंने कहा कि पूरे राजस्थान में लॉ एंड ऑर्डर की व्याख्या ही बदल गई है। लॉ एंड ऑर्डर का मतलब होता है- 'कानून और व्यवस्था' गहलोत सरकार के लॉ एंड ऑर्डर का मतलब है- 'लो और ऑर्डर करो' राजस्थान की गहलोत सरकार पूरी भ्रष्ट सरकार है।

सत्ता परिवर्तन ही समस्या का समाधान-अवधेश चौधरी

बरहज/देवरिया

बरहज विधानसभा क्षेत्र कुईया, शिवपुर,भगवान पुर,कुसहा में सघन जनसंपर्क कर जनता को सम्बोधित करते हुए सपा जिला उपाध्यक्ष अवधेश चौधरी ने सरकार को आड़े हाथों लेते हुये कहा कि देश व प्रदेश में महगाई, बेरोगारी, भ्रष्टाचार चरम पर है, और सरकार मौन धारण किये हुए हैं।आज नौजवान, गरीब, मजदूर, किसान, की बदहाली का जिम्मेदार भाजपा सरकार है,और इन सभी समस्याओं का समाधान सत्ता परिवर्तन कर सपा सरकार में है। उन्होंने आगे जनता को सम्बोधित करते हुए कहा की समाजवादी सरकार में गरीब, बेरोजगार, मजदूर ,किसान आदि सभी वर्ग की जनता खुशहाल थी किन्तु आज आम जनता दुर्दशा झेल रही है जिसका जिम्मेदार भाजपा सरकार है।

महगाई ने जनता का कमर तोड़ कर रख दिया है। डीजल, पेट्रोल व खाद्य पदार्थ के कीमतों में भारी बढ़ोतरी जनता की खरीद से दूर होती जा रही हैं ऐसे में कोई कैसे जीवन यापन करे। जनता समाजवादी पार्टी की ओर आशा भरी नजरों से देख रही है।इस दौरान अमरजीत यादव,भगवान खरवार,शिबू पाण्डेय, रामभवन आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बरहज बिधान सभा मे ग्राम सभा टेकुवा कुइया शिवपुर भगवानपुर कुसहा में जनसपंर्क करके 2022 का आश्रीवाद समाजवादी पार्टी की सरकार व मा0 श्री अखिलेश यादव जी को मुख्मंत्री बनाने की हर रोज हर गांव गांव घर घर अपील करते हुवे श्री अवधेश चौधरी जिला उपाध्यक्ष देवरिया बिधान सभा छेत्र बरहज भगवान खरवार अमरजीत यादव शिबू पांडये धर्मेंद्र रामभवन सपा कर्तकर्ता रहे मौजूद

वेंकैया नायडू बोले- भ्रष्टाचार ने लोकतंत्र के हृदय को लहूलुहान किया है

नयी दिल्ली। (एजेंसी)।

उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू ने रविवार को कहा कि भ्रष्टाचार ने लोकतंत्र के हृदय को लहूलुहान कर रखा है और उन्होंने इसके प्रति कतई बर्दाश्त नहीं करने की नीति अपनाने की अपील की। उन्होंने भ्रष्टाचार के दोषी असैन्य नौकरशाहों और जनप्रतिनिधियों के खिलाफ भ्रष्टाचार निरोधक कानून के तहत कड़ी एवं समयबद्ध कार्रवाई की जरूरत पर जोर दिया। नायडू ने नौकरशाहों के भ्रष्टाचार से जुड़े मामलों के त्वरित निष्पादन पर भी जोर दिया।

साथ ही उपराष्ट्रपति ने चेतावनी दी कि जो अधिकारी उचित कार्रवाई करते हैं उन्हें हतोत्साहित नहीं करना चाहिए या उनका उत्पीड़न नहीं किया जाना चाहिए। उपराष्ट्रपति सचिवालय की तरफ से जारी बयान के अनुसार, ''भ्रष्ट असैन्य नौकरशाहों से कड़ाई से निपटा जाना चाहिए लेकिन हमें जनहित में अधिकारियों को साहसिक फैसले लेने से हतोत्साहित नहीं करना चाहिए।'' नायडू ने ये बातें पूर्व कैबिनेट सचिव और झारखंड के पूर्व राज्यपाल प्रभात कुमार की पुस्तक के विमोचन के अवसर पर कही। उपराष्ट्रपति ने कहा कि ईमानदार असैन्य नौकरशाहों की उपलब्धियों का जश्न मनाने और उनके योगदान को सराहने की भी जरूरत है। उन्होंने कहा कि यह न केवल युवा अधिकारियों के लिए प्रोत्साहन होगा बल्कि वे और अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित होंगे।

भगवंत मान का दावा- भाजपा के वरिष्ठ नेता ने पार्टी में शामिल होने के लिए धन, मंत्री पद की पेशकश की

चंडीगढ़। (एजेंसी)।

आम आदमी पार्टी (आप) की पंजाब इकाई के अध्यक्ष भगवंत मान ने रविवार को दावा किया कि भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले भगवा पार्टी में शामिल होने के लिए उन्हें धन और केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल किये जाने की पेशकश की। संगरूर के सांसद ने यहां संवाददाताओं को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें धन या किसी अन्य चीज से नहीं खरीदा जा सकता है। किसी का नाम लिए बगैर मान ने दावा किया कि भाजपा के वरिष्ठ नेता ने चार दिन पहले उनसे संपर्क किया और उनसे कहा, ''मान साहब, भाजपा में शामिल होने के लिए आप क्या लोगे?''

उन्होंने आरोप लगाया कि उनसे यह भी पूछा गया कि क्या ''आपको धन की जरूरत है।'' आप नेता ने दावा किया कि उनसे कहा गया कि अगर वह भाजपा में शामिल होते हैं तो उन्हें केंद्र सरकार में कैबिनेट मंत्री बनाया जाएगा। पंजाब में आप के एकमात्र सांसद मान ने कहा, ''मैंने उनसे (भाजपा नेता) कहा कि मैं मिशन पर हूं, न कि कमीशन पर।'' उन्होंने कहा कि उन्होंने भाजपा नेता से कहा कि दूसरे लोग होंगे ''जिन्हें आप खरीद सकते हैं।'' मान ने कहा कि उन्हें धन या किसी और चीज से नहीं खरीदा जा सकता है। जब उनसे भाजपा नेता के नाम का खुलासा करने के लिए कहा गया तो उन्होंने कहा कि सही समय पर वह नाम का खुलासा करेंगे। आप नेता ने दावा किया कि भाजपा का पंजाब में कोई जनाधार नहीं है। भाजपा नेताओं को गांवों में प्रवेश नहीं करने दिया जा रहा था और कृषि कानूनों को लेकर उन्हें किसानों के गुस्से का सामना करना पड़ा। इन कानूनों को सरकार ने पिछले हफ्ते निरस्त कर दिया।

बुआ-बबुआ की जोड़ी पर योगी का निशाना, कहा- इन्होंने केवल अपना विकास किया

नई दिल्ली (एजेंसी।

उत्तर प्रदेश में अगले साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। ऐसे में सभी राजनीतिक दल अपनी-अपनी तैयारियों में जुट गए हैं। इन सबके बीच उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विपक्ष पर जबरदस्त तरीके से पलटवार किया है। इतना ही नहीं, उन्होंने बुआ-बबुआ की जोड़ी पर भी जमकर हमला किया है। पूर्ववर्ती सरकारों का नेतृत्व करने वाले अखिलेश यादव और मायावती पर योगी आदित्यनाथ ने जबरदस्त तरीके से प्रहार किया। चंदौली में योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विकास बहुत पहले हो जाना चाहिए था, बुआ-बबुआ की जोड़ी क्या कर रही थी? इन्होंने केवल अपना विकास किया। इनके लिए इनका परिवार ही पूरा प्रदेश था। हमारे लिए प्रदेश की जनता ही परिवार है। अगर अखिलेश यादव परिवार की परिभाषा समझते तो वो मुझ पर परिवार न होने का आक्षेप नहीं करते।

योगी ने कहा कि सपा राम भक्तों पर गोलियां चला सकती है और राम जन्मभूमि पर आतंकी हमला करने वाले आतंकवादियों की पैरवी करके उनके ख़िलाफ़ दायर मुकदमों को वापस लेने का काम भी इसी समाजवादी पार्टी की सरकार ने किया था। इसके साथ ही योगी ने कहा कि 2017 में अगर क्ष्छ्क का विधायक चुना गया होता तो इस भूमि के सौंदर्यीकरण में इतना समय नहीं लगता। विपक्ष के पास कोई

मुद्दा नहीं है। जब उन्हें सत्ता मिली तब उन्होंने जातिवाद और भाई-भतीजावाद के नाम पर पूरी जाति को बदनाम किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि सपा, बसपा और कांग्रेस की तरह नहीं है हमारी सरकार जो चेहरा देखकर जनता को सुविधाओं का लाभ दिया जाए। हमारी सरकार में हर काम जनता के लिए ही होते हैं।

योगी ने कहा कि आज जानते हैं विपक्ष के पास कोई मुद्दा नहीं है। वो परिवारवाद, वंशवाद से ऊपर नहीं उठ पाए। माफियागीरी, गुंडागर्दी, विकास के पैसों पर डकैती डालकर बाहर भेजते थे। आज वही पैसा पौराणिक स्थलों के सुंदरीकरण और जीर्णोद्धार के लिए खर्च हो रहा है। जब भी उनकी सरकार में कोई भर्ती निकलती थी तो उसमें भ्रष्टाचार का घुन लग जाता था। माननीय न्यायालय को उन भर्तियों पर रोक लगानी पड़ती थी। क्योंकि उनकी भर्ती में सिर्फ पैसा चलता था। पिछली सरकार ने प्रदेश को चरागाह बना दिया था। माफियागीरी थी, किसी की भी जमीन हो, सरकार संपत्ति हो सब जगह कब्जा करते थे। लेकिन आज जब उन माफियाओं पर बुलडोजर चल रहा है तो लोग हल्ला मचा रहे हैं।

सपा की सरकार बनते ही उप्र में होगी जातिवार जनगणना: ओम प्रकाश राजभर

बलिया (उत्तर प्रदेश)। (एजेंसी)।

उत्तर प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव के लिए समाजवादी पार्टी (सपा) से गठबंधन कर चुकी सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर ने कहा है कि चुनाव बाद सपा की सरकार बनते ही राज्य में सबसे पहले जातिवार जनगणना कराकर आबादी के हिसाब से सभी वर्गों को प्रतिनिधित्व दिया जायेगा। राजभर ने रविवार को जिले के रसड़ा क्षेत्र में संवाददाताओं से बातचीत में यह बात कही। भागीदारी संकल्प मोर्चा की सरकार बनने पर पांच मुख्यमंत्री व 20 उप मुख्यमंत्री बनाने की घोषणा करने वाले राजभर से जब पूछा गया कि क्या सपा सरकार बनने पर उनकी घोषणा पर अमल होगा, उन्होंने कहा कि सपा की सरकार बनने पर मुख्यमंत्री सिर्फ सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ही होंगे।

अपने पुराने बयान से पलटते हुए प्रदेश के पूर्व कैबिनेट मंत्री ने कहा कि उनका बयान भागीदारी संकल्प मोर्चा की सरकार बनने के लिए था। उनका लक्ष्य भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को सत्ता से हटाना व अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाना है। राजभर ने मथुरा में मंदिर बनाने की तैयारी वाले बयान को लेकर चर्चा में आये प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य को भाजपा का तोता करार दिया और कहा कि मौर्य समाज के लोगों की हत्या पर उप मुख्यमंत्री मौन रहते हैं और पिछड़े समाज के साथ भाजपा किस तरह अन्याय कर रही है, यह मौर्य को नजर नहीं आता। हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा को मौर्य को मुख्यमंत्री बनाना चाहिये था। उन्होंने कहा कि योगी आदित्यनाथ को कुर्सी देकर इस पार्टी ने मौर्य के साथ धोखा किया है।

एआईएमआईएम नेता असदुद्दीन ओवैसी से गठबंधन पर पूछे जाने पर राजभर ने कहा, ''ओवैसी पहले सपा से गठबंधन को लेकर मन बनायें, ओवैसी 100 सीटें मांगेंगे तो उनसे कैसे गठबंधन होगा।'' गौरतलब है कि ओवैसी की पार्टी राजभर द्वारा गठित भागीदारी संकल्प मोर्चा में शामिल है। मगर इसी बीच

राजभर ने सपा के साथ गठबंधन कर लिया। इसके बाद एआईएमआईएम और सपा के गठबंधन को लेकर स्थिति अब तक साफ नहीं हुई है।

भारत की 50 प्रतिशत से अधिक पात्र आबादी का पूर्ण टीकाकरण: मनसुख मांडविया

नयी दिल्ली। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने देश में कोरोना वायरस संक्रमण रोधी टीके की 127.61 करोड़ से अधिक खुराक दिए जाने के बीच रविवार को कहा कि देश में 50 प्रतिशत से अधिक पात्र वयस्क आबादी का पूर्ण टीकाकरण हो चुका है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि देश में 84.8प्रतिशत से अधिक वयस्क आबादी को टीके की पहली खुराक दी जा चुकी है। मांडविया ने ट्वीट किया '' बधाई हो भारत। यह बेहद गर्व का क्षण है क्योंकि 50 प्रतिशत से अधिक पात्र आबादी का पूर्ण टीकाकरण हो गया है। हम साथ मिलकर कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई जीतेंगे।'' सुबह सात बजे तक की एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले 24 घंटे की अवधि में टीके की 1,04,18,707 खुराक दिए जाने के साथ ही देश में अब तक दी जा चुकी खुराकों की संख्या 127.61 करोड़ के पार हो गई है। मंत्रालय के अनुसार यह उपलब्धि 1,32,44,514 सत्रों में हासिल की गई। गौरतलब है कि देशव्यापी टीकाकरण अभियान की शुरुआत 16 जनवरी से की गई थी और पहले चरण में स्वास्थ्य देखभाल कर्मचारियों का टीकाकरण किया गया था। इसके बाद अग्रिम मार्चे के कर्मियों का टीकाकरण दो फरवरी से शुरू हुआ था।

सार समाचार

फ्रांस की रिपब्लिकन पार्टी ने एक महिला को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार चुना

पेरिस। फ्रांस की द रिपब्लिकन पार्टी ने पूर्व मंत्री वैलेरी पेक्रेसी को अगले साल राष्ट्रपति पद के लिए होने वाले चुनाव के लिए पार्टी उम्मीदवार चुना है। वैलेरी पेक्रेसी को पार्टी के प्राथमिक चुनाव में 61 फीसदी वोट मिले, जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी एरिक सिओटी को 39 प्रतिशत वोट मिले। रिपब्लिकन पार्टी के लगभग 140,000 पंजीकृत सदस्य इस मतदान में भाग लेने के पात्र थे।

हम और पाबंदियां लगाए बिना चौथी लहर से निपट सकते हैं: दक्षिण अफ्रीकी मंत्री

जोहानिसबर्ग। दक्षिण अफ्रीका के स्वास्थ्य मंत्री जोए फाहला ने कहा कि देश कोरोना वायरस के ओमीक्रोन स्वरूप से आयी महामारी की चौथी लहर से बिना सख्त पाबंदियां लगाए निपट सकता है। साथ ही उन्होंने नागरिकों से प्रोटोकॉल का पालन करने और टीके की पूरी खुराक लेने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा, ''हम इस चौथी लहर से निपट सकते हैं, हम मौलिक उपकरणों के साथ ओमीक्रोन से निपट सकते हैं।'' उन्होंने शुक्रवार को एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, ''अगर हम सुरक्षा उपाय करने का अपना मौलिक कर्तव्य निभाते हैं और अगर 12 साल से अधिक आयु के हम सभी पात्र लोग टीके की खुराक लेने के लिए अपने नजदीकी टीकाकरण केंद्र जाते हैं तो हम इससे इस तरीके से निपट सकते हैं जिसमें सरकार को अगले कुछ दिनों में गंभीर पाबंदियां लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।'' स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि टीके की खुराक ले चुके केवल कुछ ही लोगबीमार पड़े हैं और ज्यादातर में हल्के लक्षण हैं जबकि अस्पताल में भर्ती होने वाले मरीजों में से बड़ी संख्या उन लोगों की है जिन्होंने टीके की खुराक नहीं ली है।

पूर्वी केन्या में बस दुर्घटना में 18 की मौत

नैरोबी। पूर्वी केन्या के किंतुई काउंटी में बस नदी में गिरने से कम से कम 18 यात्रियों की मौत हो गई। मविंगी ईस्ट सब-काउंटी पुलिस कमांडर जोसेफ याकन ने कहा कि एक बस के नदी में गिरने के बाद 10 यात्रियों को बचा लिया गया है, जिसमें कम से कम 30 लोग सवार थे। समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, पीड़ित मविंगी कैथोलिक चर्च के गाना बजानेवालों के सदस्य थे और अपने पुरुष सहयोगी की शादी के लिए मविंगी टाउन से नुउ क्षेत्र की यात्रा कर रहे थे, जब दुर्घटना हुई। याकन ने कहा कि बस के चालक ने बाढ़ वाले पुल से वाहन को आगे बढ़ाने का प्रयास किया, लेकिन पानी का फ्लो बहुत तेज था, जिस कारण बस को नदी में बहा ले गया। उन्होंने फोन पर कहा, कुछ को बचा लिया गया है लेकिन अब हमें 18 लोगों के शव मिले हैं। हमने घटना के कारणों का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी है। याकन ने कहा कि बस वर्तमान में कीचड़ में समा गई है और बचाव के प्रयास जारी हैं।

तंजानिया में बस में आग लगने से 1 की मौत, 19 घायल

दार एस सलाम। तंजानिया के दक्षिणी पहाड़ी क्षेत्र सोंगवे में एक बस ने एक ट्रक को टक्कर मार दी और टक्कर लगने से उसमें आग लग गई। इस हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई और 19 घायल हो गए। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। सोंगवे क्षेत्रीय पुलिस कमांडर जेनेट मैगोमी ने कहा कि दुर्घटना स्थानीय समय अनुसार शुक्रवार रात 10 बजे हुई, जब जाम्बिया के साथ सीमा के पास मबोजी जिले में ट्रक से टकराने के बाद बस में आग लग गई। मैगोमी ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, मृत यात्री और 19 घायल यात्री कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (डीआरसी) के नागरिक हैं। समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने कहा कि बस ने एक खराब ट्रक को टक्कर मार दी, जो सड़क के किनारे खड़ी थी। ट्रक सोंगवे क्षेत्र से रुकवा क्षेत्र में सीमेंट ला रही थी। मागोमी ने कहा कि बस के चालक सहित घायल यात्रियों में से चार की हालत गंभीर है और उन्हें विशेष इलाज के लिए मबेया क्षेत्रीय रेफरल अस्पताल ले जाया गया। उन्होंने कहा कि अन्य घायल यात्रियों को सोंगवे क्षेत्रीय सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सोंगवे के क्षेत्रीय आयुक्त, ओमरी मगुम्बा ने कहा कि आग से बस और यात्रियों का सामान जल कर राख हो गया।

अफगान प्रांतों में चोरी के गिरोह का सरगना मारा गया, 8 लुटेरे गिरफ्तार

काबुल। अफगानिस्तान के दो प्रांतों में कई हाई-प्रोफाइल अपराधों और चोरी के गिरोह के एक सरगना को मार गिराया गया और 8 हथियारबंद लुटेरों को गिरफ्तार किया गया है। देश की राष्ट्रीय खुफिया एजेंसी ने एक बयान में कहा, पूर्वी नंगरहार प्रांत में, खुफिया महानिदेशालय (जीडीआई) के विशेष बलों ने शनिवार को एक चोरी और अपहरण गिरोह के खिलाफ एक अभियान चलाया। जीडीआई के अनुसार, मैवंड के रूप में पहचाने जाने वाले कुख्यात गिरोह के नेता को सुरक्षा बलों के साथ काम करने के बाद मार दिया गया था और एक संदिग्ध व्यक्ति को ऑपरेशन के बाद गिरफ्तार किया गया था। उसके पास से कई राउंड हथियार भी जब्त किए गए। प्रांतीय पुलिस विभाग ने एक बयान में लिखा, पश्चिमी निमरोज प्रांत में तालिबान सुरक्षा बलों ने हाल ही में प्रांत भर में अलग-अलग अभियानों के बाद 8 संदिग्ध सशस्त्र लुटेरों को गिरफ्तार किया। संदिग्धों को स्क्रीनिंग और संभावित कानूनी प्रक्रिया के लिए संबंधित विभागों में ले जाया गया।

मलेशिया में शनिवार को मिले 4,896 नए कोविड के मामले, संक्रमण से 36 और मौतें

कुआलालंपुर। स्वास्थ्य मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, मलेशिया में शनिवार रात्रि तक कोविड से संक्रमित 4,896 रोगी मिले हैं, जिससे देश में कुल संक्रमितों की संख्या अब 26,54,474 हो गई है। मंत्रालय की वेबसाइट पर जारी आंकड़ों से पता चला है कि नए मामलों में से 18 बाहर के हैं और 4,878 स्थानीय मामले हैं। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, कोविड से 36 और मौत होने की सूचना मिली है, जिससे मरने वालों की संख्या अब वहां 30,574 हो गई है। 4,678 लोग ठीक कोविड से ठीक हो चुके हैं। जिससे ठीक होने वालों की कुल संख्या 25,61,232 हो गई है। 62,668 सक्रिय मामले हैं, जिनमें से 490 लोगों को डॉक्टरों की निगरानी में रखा गया हैं और उनमें से 269 मरीजों को सांस लेने में समस्या हो रही हैं। देश में शनिवार को टीके की 67,701 लोगों को डोज दी गईं और लगभग 79.2 प्रतिशत आबादी ने टीके की पहली खुराक ले ली है और 77.9 प्रतिशत लोग पूरी तरह से टीकाकरण करा चुके हैं।

लिथुआनिया जैसे छोटे देश ने चीन को किया परेशान, पहले ताइवान में खोला दफ्तर, अब उड़ा रहा मजाक

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूरोप के एक छोटे से देश लिथुआनिया ने चीन को परेशान कर दिया है। आलम यह है कि चीन को लगातार लिथुआनिया धमकी तक दे रहा है। लिथुआनिया ने पहले तो ताइवान में अपना दफ्तर खोल लिया और अब चीन का मजाक में उड़ा रहा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि लिथुआनिया जैसे छोटे देश ने चीन की नाराजगी के बावजूद भी ताइवान में अपना दफ्तर खोला है। दुनिया में महाशक्ति के रूप में खुद को स्थापित कर चुका चीन लिथुआनिया के आगे कमजोर सा दिखाई दे रहा है। हालात यह है कि दोनों देशों के बीच जुबानी जंग भी तेज हो गई है। राजनयिक संबंध में भी गिरावट देखा गया है। चीन चाहता है कि लिथुआनिया ताइवान से अपने संबंधों को खत्म करें। लेकिन लिथुआनिया अपने फैसले से पीछे हटने को तैयार नहीं है।

चीन की धमकियों का परवाह ना करते हुए लिथुआनिया ने अब तो उसका मजाक उड़ाना शुरू कर दिया है। लिथुआनिया के एक सांसद ने बीजिंग को पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कॉमेडी तक बता दिया। आपको बता दें कि चीन का पूरा पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना है। जानकारी यह भी आ रही है कि नाराजगी की वजह से लिथोनिया को चीन के कस्टमर हिस्ट्री से हटा दिया गया है। इसका मतलब यह है कि लिथुआनिया का सामान चीनी बंदरगाहों में प्रवेश नहीं कर सकता है। हालांकि, ताइवान के साथ व्यापक अनौपचारिक संबंध बनाए रखते हुए, अमेरिका और जापान सहित कई देशों के चीन के साथ आधिकारिक राजनयिक संबंध जारी हैं। लिथुआनिया का कहना है कि उसकी ताइवान में अपना प्रतिनिधि कार्यालय खोलने की योजना है। चीन ने इससे पहले लिथुआनियाई राजदूत को निष्कासित कर दिया था और वहां से अपनेराजदूत को वापस बुला लिया था।

ताइवान के साथ अपने संबंध को समाप्त करे लिथुआनिया

चीन ने लिथुआनिया से कहा कि वह ताइवान के साथ अपने नए बढ़े हुए संबंधों को समाप्त करे। इस संबंध की वजह से चीन को यूरोपीय संघ के इस सदस्य राष्ट्र के साथ राजदूत स्तर से राजनयिक संबंधों में कटौती करने के लिए प्रेरित किया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता झाओ लिजियान ने कहा कि लिथुआनिया को ताइवान के प्रतिनिधि कार्यालय के नाम से बाल्टिक राष्ट्र में एक वास्तविक दूतावास खोलने की अनुमति देने की अपनी गलती तुरंत सुधारनी चाहिए। ताइवान पर चीन अपना आधिपत्य होने का दावा करता है। झाओ ने एक दैनिक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि यूरोपीय संघ के सदस्य-राष्ट्र (लिथुआनिया) को राष्ट्रीय संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए चीनी लोगों के मजबूत संकल्प, इच्छाशक्ति और क्षमता को कम करके नहीं आंकना चाहिए।

चीन ने ताइवान के मुद्दे पर लिथुआनिया के साथ राजनयिक संबंधों का स्तर कम किया

लिथुआनिया द्वारा ताइवान को प्रतिनिधि कार्यालय खोलने की अनुमति दिए जाने से नाराज चीन ने लिथुआनिया

के साथ अपने राजनयिक संबंधों का स्तर कम कर दिया। इस कदम से यूरोपीय संघ (ईयू) के साथ बीजिंग के संबंधों को नुकसान पहुंच सकता है, क्योंकि 30 लाख से भी कम आबादी वाला यह बाल्टिक देश ईयू का प्रभावशाली सदस्य है। चीन के विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि दुनिया में केवल एक चीन है और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना संपूर्ण चीन का प्रतिनिधित्व करने वाली एकमात्र वैध सरकार है।

चीन की बढ़ती क्षमताओं के परिणाम 'गहरे' हैं: जयशंकर

अबू धाबी (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शनिवार को कहा कि चीन के उदय और उसकी बढ़ती क्षमताओं के परिणाम ''विशेष तौर पर गहरे'' हैं। अबू धाबी में पांचवें हिंद महासागर शिखर सम्मेलन (आईओसी) 2021 में बोलते हुए जयशंकर ने यह भी कहा कि वैश्विकृत दुनिया में यह महत्वपूर्ण है कि नौवहन और वायु क्षेत्र में उड़ान भरने की आजादी तथा बिना बाधा व्यापार का सम्मान किया जाए। उन्होंने कहा कि कई घटनाएं ऐसी हुई हैं जिनका हिंद महासागर क्षेत्र पर सीधा असर हो रहा है। दो घटनाक्रम - अमेरिका की बदलती रणनीति और चीन के उदय- ने हाल के वर्षों में हिंद महासागर के विकास को प्रभावित किया है। विदेश मंत्री ने कहा, ''2008 से हमने अमेरिका के शक्ति प्रदर्शन में बड़ी सावधानी और इसके अति विस्तार में सुधार करने की कोशिश देखी है।''

उन्होंने कहा कि कुल मिलाकर अमेरिका अपने और दुनिया दोनों के बारे में वृहद वास्तविकता की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा, ''दूसरी बड़ी प्रवृत्ति चीन का उदय है। चीन की बढ़ती क्षमताओं के परिणाम खासतौर से गहरे हैं। इसके परिणामस्वरूप चाहे कनेक्टिविटी हो, प्रौद्योगिकी या व्यापार अब सत्ता तथा प्रभाव की बदली प्रकृति पर बहस चल रही है। इसके अलावा हम एशिया में क्षेत्रीय मुद्दों पर तनाव बढ़ते हुए देख रहे हैं। पूर्व में किए गए समझौतों और समझ पर अब कुछ सवालिया निशान खड़े होते दिखते हैं। समय के साथ इसके जवाब मिलेंगे।'' उन्होंने प्रत्यक्ष तौर पर पिछले साल मई

से पूर्वी लद्दाख में भारत और चीन के बीच चल रहे गतिरोध का हवाला दिया। जयशंकर ने कहा कि मुश्किल वक्त में मजबूत अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि अमेरिका, भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया का समूह क्वाड हिंद महासागर के एक छोर पर इसका अच्छा उदाहरण है।

उन्होंने कहा, ''दो घटनाक्रम ने उन अनिश्चितताओं को बढ़ा दिया है जिस पर हिंद महासागर के देश विचार कर रहे हैं। पहला अफगानिस्तान से अमेरिकी सेना की वापसी है। हम सभी किसी न किसी तरीके से इससे प्रभावित हैं।'' विदेश मंत्री ने कहा कि दूसरा इस क्षेत्र पर कोरोना वायरस का असर है जो खासतौर से

विदेश मंत्री जयशंकर ने यूएई के शीर्ष नेताओं से मुलाकात की

अबू धाबी। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने यहां अबू धाबी के युवराज मोहम्मद बिन जायद अल नाह्यान और विदेश मंत्री शेख अब्दुल्ला बिन जायद से मुलाकात की और विश्वास जताया कि आने वाले वर्षों में भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के बीच द्विपक्षीय रणनीतिक संबंध नई ऊंचाइयों को छुएंगे। जयशंकर यहां हिंद महासागरः पारिस्थितिकी, अर्थव्यवस्था, महामारी विषय वाले पांचवें हिंद महासागर सम्मेलन में भाग लेने के लिए पहुंचे हैं। जयशंकर ने अबूधाबी के युवराज के साथ मुलाकात के बाद ट्वीट किया, आज, मेरी मेजबानी के लिए एचएच मोहम्मद बिन जायद का धन्यवाद। संयुक्त अरब अमीरात की स्वर्ण जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तरफ से उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा, विश्वास है कि आने वाले वर्षों में हमारी करीबी साझेदारी नयी ऊंचाइयों को छुएगी। इससे पहले, जयशंकर ने यूएई और ओमान के अपने समकक्षों से मुलाकात की और उनके साथ द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा की।

मोरक्को पुलिस ने संगमरमर के ब्लॉकों में छिपी भांग की तस्करी का पर्दाफाश किया

रबात। मोरक्को पुलिस ने एक बयान में कहा कि पुलिस टीम ने कैसाब्लांका के पास 8.99 टन भांग की तस्करी के प्रयास को विफल कर दिया है। इसमें कहा गया है कि ड्रग्स को लगभग 10 टन के संगमरमर के बड़े ब्लॉकों में सावधानी से छिपाया गया था, जिसे एक अफ्रीकी देश को

निर्यात करना था। समाचार एजेंसीकी रिपोर्ट के अनुसार, यह ऑपरेशन कैसाब्लांका के पास मौलिन एल औएद गांव में स्थित एक गोदाम में हुआ, जिसमें बड़ी मात्रा में धन और नकली लाइसेंस प्लेट वाली दो कारें भी जब्त की गईं। अंतरराष्ट्रीय मादक पदार्थों की तस्करी में कथित संलिप्तता के आरोप में पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया था। बयान में कहा गया है कि गिरफ्तार किए गए लोगों में से दो मोरक्को पुलिस को अंतरराष्ट्रीय मादक पदार्थों की तस्करी में शामिल होने के लिए वांछित थे, जबकि तीसरा स्वैच्छिक हत्या के मामले में फ्रांसीसी अधिकारियों द्वारा जारी अंतरराष्ट्रीय गिरफ्तारी वारंट का विषय है। ड्रग्स एंड क्राइम पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय के अनुसार, पिछले दशक में भांग की खेती पर नकेल कसने के प्रयासों के बावजूद, मोरक्को दुनिया के सबसे बड़े भांग राल उत्पादकों में से एक बना हुआ है।

मध्य इंडोनेशिया में आया 6.2 तीव्रता का भूकंप, किसी के हताहत होने की खबर नहीं

जकर्ता (एजेंसी)। अधिकारियों ने कहा कि रविवार को मध्य इंडोनेशिया के उत्तरी सुलावेसी प्रांत में 6.2 तीव्रता का भूकंप आया और किसी के हताहत होने या नुकसान की कोई रिपोर्ट जारी नहीं की गई।

मौसम विज्ञान, जलवायु विज्ञान और भूभौतिकी एजेंसी डेरियोनो के भूकंप और सुनामी शमन विभाग के प्रमुख ने सिन्हुआ को फोन पर बताया कि झटकों से कोई सुनामी नहीं आ रही है। अधिकारी ने कहा कि भूकंप रविवार (23.47 जीएमटी शनिवार) को जकार्ता में समय 6.47 बजे आया, जिसका केंद्र मेलोंगुआन शहर से 147 किमी दक्षिण-पूर्व में और समुद्र तल के नीचे 157 किमी की गहराई पर था। उनके अनुसार, भूकंप की तीव्रता पास के उत्तरी मालुकु प्रांत के मोरोताई द्वीपों पर थ्री एमएमआई (मॉडिफाइड मर्कल्ली इंटेंसिटी) पर महसूस की गई। उत्तरी मालुकु प्रांत की आपातकालीन इकाई के प्रमुख युसरी अब्दुल कासिम ने कहा कि सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र मरोताई द्वीपों पर नुकसान या हताहत होने की कोई प्रारंभिक रिपोर्ट नहीं है, लेकिन द्वीपों के तटीय क्षेत्र शनिवार की रात लगभग 1 मीटर ऊंचे समुद्र के पानी में डूब गए थे। उन्होंने फोन पर समाचार एजेंसी सिन्हुआ को बताया, कि मोरोटाई द्वीपों से घरों के क्षतिग्रस्त होने या घायल होने की कोई सूचना नहीं है। लेकिन दर्जनों लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया है। उत्तरी मालुकु प्रांत के खोज और बचाव कार्यालय के प्रमुख मुहम्मद अराफा ने बताया कि मरोताई द्वीप समूह में स्थिति सुरक्षित है।

ओमिक्रॉन खतरे के मद्देनजर क्यूबा ने यात्रा नियमों को किया कड़ा

हवाना (एजेंसी)। क्यूबा सरकार ने कोरोना ओमिक्रॉन वेरिएंट को लेकर बढ़ती वैश्विक चिंता के बीच लगातार सावधानी बरती है। शनिवार से शुरू होकर, कैरेबियाई राष्ट्र ने राष्ट्रव्यापी मामलों के पठार के रूप में इनबाउंड अंतर्राष्ट्रीय यात्रियों के लिए यात्रा नियमों को कड़ा कर दिया। समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, दक्षिण अफ्रीका, लेसोथो, बोत्सवाना, इस्वातिनी, नामीबिया, जिम्बाब्वे, मलावी और मोजाम्बिक से क्यूबा में उड़ान भरने वाले सभी यात्रियों को अब टीकाकरण प्रमाण पत्र और आगमन से 72 घंटे के अंदर लिए गए पीसीआर टेस्ट की निगेटिव रिपोर्ट दिखानी होगी।

इसके अलावा, उन्हें आवाजाही पर और अपने दौरे के छठे दिन पीसीआर टेस्ट करने के साथ-साथ अपने खर्च पर एक सप्ताह के लिए क्वारंटीन होटलों में रहना होगा। नए उपायों को अपनाया गया है क्योंकि क्यूबा में शनिवार को कोरोनोवायरस के 110 मामले सामने आए। इसी के साथ मामलों की कुल संख्या बढ़कर 963,002 हो गई जबकि एक व्यक्ति की मौत हो गई जिससे मौतों की संख्या बढ़कर क्रमशः 8,307 हो गई। क्यूबा के सार्वजनिक स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, वर्तमान में, देशभर में 608 सक्रिय मामले हैं, जिनमें से 23 गहन देखभाल इकाइयों में हैं और अब तक ओमिक्रॉन वेरिएंट का कोई मामला सामने नहीं आया है।

वर्तमान में, रेस्तरां, खेल सुविधाएं और अवकाश केंद्र जगह-जगह मास्क जनादेश और कोरोनावायरस प्रोटोकॉल का पालन कर रहे हैं। इस साल के अंत तक देश के समुद्र तटीय सैरगाह और होटल सुविधाओं के 100,000 से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आने की उम्मीद है। आज तक, क्यूबा ने अपनी 80 प्रतिशत से अधिक आबादी को घरेलू टीकों के साथ टीका लगाया है, जिसमें 2-18 वर्ष की आयु के बच्चे भी शामिल हैं।

हाल के दिनों में, क्यूबा के बायोफार्मास्यूटिकल अधिकारियों ने कहा कि वैज्ञानिक नए वेरिएंट के खिलाफ आबादी की सुरक्षा की गारंटी के लिए घरेलू कोरोनावायरस टीकों को अपग्रेड करने की संभावना का आकलन कर रहे हैं। कैरेबियाई राष्ट्र को दिसंबर के अंत से पहले अपने 1.1 करोड़ से ज्यादा निवासियों में से 90 प्रतिशत से ज्यादा को कोरोना के खिलाफ प्रतिरक्षित करने की उम्मीद है। उसी समय, हवाना में स्थानीय सरकार सोमवार को क्यूबा की राजधानी में 22 लाख निवासियों के घर में घरेलू टीकों के साथ एक कोरोना बूस्टर शॉट ड्राइव के लिए तैयार है। इसके अलावा, क्यूबा के स्वास्थ्य अधिकारियों ने लोगों को मच्छरों के काटने के खिलाफ सावधानी बरतने का निर्देश दिया है क्योंकि देशभर में डेंगू के मामले बढ़ रहे हैं।

सर्बिया के बाद वाशिंगटन में पाकिस्तानी दूतावास के कर्मचारियों की सैलरी पर आफत, एक ने दिया इस्तीफा

चंडीगढ़। (एजेंसी)। पाकिस्तान ने आज अपने कंगाल होने का ऐलान कर दिया। ताजा खबर ये है कि इमरान खान के पास अपने सरकारी अफसरों को देने के लिए सैलरी नहीं है। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय के मुलाजिमों को तीन-चार महीने से वेतन तक नहीं मिला है। पाकिस्तान के टीवी चैनल और अंतरराष्ट्रीय मीडिया में इस तरह की खबर खूब सुर्खियां बटोर रही है। सर्बिया में पाकिस्तान की एंबेसी का ट्विटर अकाउंट जहां से सैलरी न मिलने से नाराज कर्मचारी से सरकार की बेइज्जती करता हुआ ट्विट पर डाले जाने की खबर से तो आप रूबरू होंगे। लेकिन आपको बता दें कि सर्बिया में पाकिस्तान दूतावास उसका एकमात्र राजनयिक मिशन नहीं है जो वित्तीय संकट का सामना कर रहा है। सोशल मीडिया पर पाकिस्तान के सर्बियाई राजनयिकों द्वारा पीएम इमरान खान के खिलाफ बगावत करने के लिए मजबूर होने के एक दिन बाद अब खबर आ रही है कि वाशिंगटन में पाकिस्तान दूतावास भी बदहाल स्थिति में है।

सैलरी नहीं मिलने पर कर्मचारी ने दिया इस्तीफा

द न्यूज इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में पाकिस्तान दूतावास लगभग 4 महीने से अपने संविदा कर्मचारियों के वेतन का भुगतान करने में असमर्थ था। रिपोर्ट में कहा गया है कि स्थानीय रूप से भर्ती किए गए पाकिस्तानी दूतावास के कर्मचारियों में से कम से कम पांच को अगस्त 2021 से अपने मासिक वेतन के भुगतान में देरी और भुगतान का सामना करना पड़ा। वित्तीय संकट इस हद तक बढ़ गया कि एक दशक पुराने कर्मचारी को देरी और भुगतान न करने के कारण सितंबर में इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ा। इन स्थानीय कर्मचारियों को दूतावास द्वारा वार्षिक अनुबंध के आधार पर काम पर रखा गया था लेकिन अब पाकिस्तानी दूतावास की तरफ से इन्हें सैलरी नहीं दी जा रही है। बताया जा रहा है कि इन कर्मचारियों को यहाँ बेहद कम वेतन पर काम पर रखा गया था। अ?मेरिका में इन कर्मचारियों की सैलरी 2 हजार से 2,500 डॉलर के बीच है।

3 महीनों से बिना सैलरी के कर रहे काम

गौरतलब है कि इमरान खान की तरफ से एक बयान दिया गया था कि घबराना नहीं है। उससे जुड़ा वीडियो पाक दूतावास की तरफ से शेयर किया गया है। एंबेसी के ट्विटर अकाउंट पर शेयर वीडियो में कहा गया था कि महंगाई ने पिछले सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए। आप (इमरान खान) कब तक उम्मीद करते हैं कि हम सरकारी अधिकारी चुप रहेंगे और पिछले 3 महीनों से बिना सैलरी के आपके लिए काम करते रहेंगे।

इमरान सरकार ने इस तरह की खबर को मैनेज करने की और पाकिस्तान की कंगाली छुपाने की बहुत कोशिश की लेकिन पाकिस्तान सरकार के पैसे खत्म होने की खबर से पूरी दुनिया वाकिफ हो गई। पाकिस्तान में महंगाई अपने चरम पर है। पाकिस्तान का सूरत-ए-हाल खुद नुमाइंदे ही बयां कर रहे हैं।

सुविचार यशस्वियों का कर्तव्य है कि जो अपने से होड़ करे उससे अपने यश की रक्षा भी करें। - कालिदास

संपादकीय

रंग लाई सख्ती

दिल्ली में जानलेवा प्रदूषण रोकने में तंत्र की काहिली और जुबानी जमा-खर्च से क्षुब्ध सुप्रीम कोर्ट लगातार सरकारों को फटकार लगाता रहा है। बीते दिनों शीर्ष अदालत ने दो टूक कह दिया कि जमीनी हकीकत बताती है कि प्रदूषण रोकने की ईमानदार कोशिश न के बराबर हुई है। बृहस्पतिवार को कोर्ट ने दिल्ली सरकार को लताड़ा था और कहा था कि जब वयस्क वर्क फ्रॉम होम कर रहे हैं तो बच्चों को स्कूल क्यों भेजा जा रहा है? कोर्ट ने 24 घंटे में प्रदूषण नियंत्रण के ठोस कदम उठाने को कहा था। कोर्ट की मंशा थी कि अभिभावकों की कारों के बड़ी संख्या में बाहर निकलने से जाम व प्रदूषण बढ़ेगा। जिसके बाद दिल्ली सरकार ने दिल्ली के स्कूलों को बंद करने का फैसला लिया। शुक्रवार को शीर्ष अदालत ने इस बात पर नाराजगी जाहिर की कि दिल्ली के मीडिया में कुछ इस तरह रिपोर्टिंग की गई है कि कोर्ट स्कूलों को बंद करवा रहा है। यह भी कि कोर्ट प्रशासन चलाना चाहता है। बहरहाल, दिल्ली व एनसीआर में प्रदूषण की विकट स्थिति पर सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कोर्ट को बताया कि केंद्र सरकार ने प्रदूषण नियंत्रण के लिये 17 सदस्यों की फ्लाइंग स्क्वॉयड बनायी है जो निगरानी रखने वाली टास्क फोर्स को रिपोर्ट करेगी कि प्रदूषण नियंत्रण के उपायों की क्या स्थिति है। टास्क फोर्स में दो स्वतंत्र सदस्य होंगे, जो रोज शाम छह बजे मिलकर अवलोकन करेंगे कि प्रदूषण नियंत्रण निर्देशों का किस सीमा तक पालन किया जा रहा है। यदि पाया गया कि प्रदूषण नियंत्रण के उपायों का पालन नहीं किया जा रहा है तो लापरवाही से सख्ती के साथ निपटा जायेगा। औद्योगिक इकाइयों पर कड़ी शर्त लगायी गई है। मेहता ने शीर्ष अदालत से आग्रह किया कि कुछ समय इस मैकेनिज्म को काम करने दिया जाये। कोर्ट ने केंद्र सरकार की इस पहल पर संतोष जताया। वहीं जब जस्टिस चंद्रचूड़ ने जानना चाहा कि इसके दायरे में दिल्ली ही है या एनसीआर के लिये भी यह मैकेनिज्म होगा? इस बार केंद्र सरकार की ओर से कहा गया कि टास्क फोर्स दिल्ली व एनसीआर में प्रदूषण मानकों पर काम करेगी। इसके बाद सारे तथ्यों से अवगत होने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने टास्क फोर्स और एलाइंग स्कवॉयड को मंजूरी दे दी। साथ ही कोर्ट ने निर्देश दिये कि प्रदूषण नियंत्रण के लिये तुरंत कदम उठाये जायें। वहीं दूसरी ओर दिल्ली सरकार ने कोरोना वायरस की तीसरी लहर की आशंकाओं के चलते दिल्ली में कोविड अस्पतालों के निर्माण की मंजूरी भी अदालत से मांगी थी। हालांकि, दिल्ली सरकार ने पुराने अस्पतालों में बुनियादी ढांचा तैयार करना पहले ही शुरू कर दिया है। अब कोर्ट ने कोविड अस्पतालों के निर्माण को मंजूरी दे दी है। प्रदूषण से जुड़े अन्य मामलों पर अगली सुनवाई अब दस दिसंबर को होनी है। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने वायु गुणवता प्रबंधन आयोग की सिफारिशों पर राज्य सरकारों से भी कार्रवाई के बाबत रिपोर्ट मांगी थी। वहीं कोर्ट को यूपी सरकार की ओर से बताया गया कि उद्योग बंद होने से राज्य में गन्ना और दूध उद्योग प्रभावित होंगे, जिससे राज्य की प्रगति बाधित होगी। राज्य सरकार ने कोर्ट से कहा कि ज्यादातर प्रदूषित हवा पाकिस्तान से आ रही है। इस पर मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति एनवी रमण ने चुटकी ली कि क्या आप पाकिस्तान के उद्योगों पर प्रतिबंध लगाना चाहते हैं? कोर्ट ने अपने पूर्व के निर्देशों की रिपोर्टिंग पर सवाल उठाते हुए कहा कि मीडिया के एक वर्ग द्वारा स्कूल व अन्य मामलों में हमें खलनायक बनाने की कोशिश हो रही है।

प्रदूषण की बढ़ती समस्या के प्रति हम आम लोग कितने जागरूक ??

क्या कभी आपने सुना है कि, किसी जानवर ने प्रदूषण फैला दिया हो, हम में से हर किसी का एक ही जवाब होगाकि, शायद नहीं ।

आज तक किसी ने देखा नही है कि, किसी जानवर ने ध्वनि प्रदूषण ,वायु प्रदूषण या मृदा प्रदूषण फैलाया है। अगर देखा भी है तो वहां जहां जानवरों को पालतू पशु के रूप में पाला है। ढ़ेर सारे ,गाय ,भैंस ,बकरी सुअर इत्यादी जानवर को इकट्ठा इकट्ठा कर जहां रखा जाता है उनके आसपास प्रदुषण होते है,मगर उनकी साफ सफाई भोजन पानी का लोग पूरा ध्यान रखते है । जहां जानवर प्राकृतिक तरीके से रहते हैं वहां पर प्रदूषण नहीं होता है। प्रदूषण का एक सबसे बड़ा कारण हम "इंसान" हैं।

हम इंसान शिक्षित,संस्कारी ज्ञानवान गुणवान होते हुए भी प्रदूषण फैलाते है। हर तरह के प्रदूषण फैलाते है चाहे ध्वनी प्रदूषण हो,वायु प्रदूषण हो ,मृदा प्रदूषण हो जल प्रदुषण हो सभी प्रदुषण को वे फिक्र होकर बढ़ा रहे है। हर बार दिवाली पर वायु प्रदूषण का का विकराल रूप दिपावली के अगले दिन देखने के लिए मिलता है । लगभग देश के सभी शहरों में वायु प्रदूषण का लेवल इतना बढ़ जाता है कि सांस लेना मुश्किल हो जाता है ।अस्पतालों में दीपावली के बाद अचानक से सांस संबंधी बीमारियों के मरीजों की लाइन लग जाती है इसका ताजा उदाहरण दिल्ली है जहां दिवाली के बाद हर साल इतना प्रदूषण बढ़ता है कि ,हवा में सांस लेना मुश्किल हो जाता है, दिवाली के दिवाली के अगले दिन दिल्ली का एक AQI Inde× लेवल 533 था जो जहरीला से भी ज्यादा जहरीला होता है।

वही नोएडा का AQI inde× लेवल 622 था एवं गुरुग्राम का AQI Inde× लेवल 591 था ।जो नॉर्मल से बहुत ज्यादा ही खतरनाक स्थिति में था और यह हर बार दीपावली के बाद होता है ।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद भी दिल्ली में जमकर पटाखे फोड़े गए हिंदूवादी लोगों की दलील थी कि मात्र दिवाली में क्यों पटाखे बैन होते है न्यू ईयर पार्टी ,क्रिकेट के खेल में टीम इंडिया की जीत के बाद , फोड़ने वाले पटाखे से भी तो प्रदूषण फैलता है ,

शादी पार्टी में भी पटाखे फोड़े जाते है तो मात्र दीवाली पर ही पटाखे फोड़ने पर मैं क्यों बैन लगाए जाते हैं?? दिवाली में पटाखे फोड़ना दिवाली का हिस्सा है इसी तर्क के साथ लोगों ने जमकर पटाखे फोड़े और हर बार फोड़ते हैं इसका नतीजा दिवाली के अगले दिन देखने के लिए मिलता है ।

मनुष्यों की सोच क्यों इतने विकृत होती जा रही है सभी लोग जानते हैं कि प्रदूषण से सिर्फ और सिर्फ हानि ही हानि है फिर भी हम लोग प्रदूषण फैलाए जा रहे हैं।

जैसे-जैसे प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं वैसे वैसे प्रदूषण बढ़ता जा रहा है ।जो पेड़ पौधे वायु प्रदूषण को रोकते है हम उन्हें ही हम काट डालते हैं , उनके ही प्रति हम लापरवाह होते है ,क्या यह सही है??

लगभग 80त जनता भारत में शिक्षित हो चुकी है परंतु प्रदूषण के मामले में 100त जनता महामूर्ख बनी हुई है। शादी विवाह पार्टी फंक्शन क्रिकेट न्यू ईयर सब पर जमकर पटाखे फोड़ती है । पटाखे को भारत में हमेशा के लिए बंद करना करना जरूरी हो गया है अन्यथा आने वाले समय में यह प्रदूषण का लेवल बढ़ता जाएगा और स्वास जनित बीमारियां भी बढ़ती जाएंगी।

भारत में गाड़ियों की वजह से 28% ,पावर प्लांट की वजह से 11% ,डीजल जनरेटर की वजह से 10%, कचरा जलाने से 4% ,कारखाने से 30% ,धूल मिट्टी से 17% वायु प्रदूषण होता है । इस इस प्रदूषण में पराली का भी सहयोग होता है। जैसे-जैसे हम मनुष्य प्रकृति को छोड़कर कृत्रिमता की ओर बढ़ते जा रहे हैं वैसे वैसे प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। हद तो तब है जब हम शिक्षित होने के बाद भी इस दिशा में कदम नहीं उठा रहे हैं, सतर्क नहीं हो रहे हैं ।घर को साफ स्वच्छ रखने में हम जितना ध्यान देते हैं उतना ही ज्यादा हम सड़कों को हम अपने घरों के आसपास कि खाली जगहों को प्रदूषित करते हैं ,जहाँ तहाँ कचरा फेंकते हैं जिससे वायु प्रदूषण बढ़ता है।

2020 की कोरोना महामारी ने लोगों को मास पहना दिया और यह मास्क सिर्फ कोरोना ही नही प्रदूषण की वजह से भी जरूरी हो गया है। छोटे शहरो के हर गली मोहल्ले में प्रदूषण का लेवल इतना बढ़ गया है कि सांस लेना मुश्किल हो रहा है ।आप सब्जी मार्केट से होकर चले जाइए या फल मार्केट से होकर चले जाइए या या सड़कों के किनारे पैदल चलिए हर जगह प्रदूषण ही प्रदूषण है । लोगों के घर जितने साफ स्वच्छ होते हैं ,घर से बाहर उतना ही प्रदूषण बढ़ा हुआ रहता है कि,घर से बाहर बिना कोरोना के बिना भी मास्क पहनना जरूरी है।

एक कोशिश स्वच्छता अभियान के माध्यम से की गई थी कि , हर जगह साफ और स्वच्छ रखा जाए ,प्रदूषण को रोका जाए, परंतु यह कारगर साबित नहीं हो रहा है। लोग समझ ही नहीं रहे हैं प्रदूषण से कितना नुकसान हो रहा है ।जो लोग स्वस्थ हैं उन्हें तो फर्क नहीं पड़ रहा है लेकिन जो बुजुर्ग है बच्चे हैं उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। जितना प्रदूषण वायु प्रदूषण से फैल रहा है ,उतना ही प्रदूषण ध्वनि प्रदूषण और मृदा प्रदूषण में भी फैल रहा है ।

ध्वनि प्रदूषण का भी हमारे समाज में विकृत रूप देखने को मिल रहा है। आए दिन शादी विवाह के मौकों पर गाजे बाजे ,डीजे पटाखे बजते और फोड़े जाते हैं, जिसकी भयानक ध्वनि कुछ ही लोगों को अच्छी लगती है जो उस विवाह समारोह में शामिल होते हैं। बाकी आस पड़ोस के लोग बुजुर्ग लोग छात्र जिनकी परीक्षाएं या क्लासेस होते हैं, वे लोग गाजे बाजे बैंड पार्टी, पटाखे डीजे से अत्यधिक परेशान होते हैं। अनिद्रा तो होती ही है ,साथ ही बेचैनी भी होती है।

सरकार को उन सब चीजों को भी बैन करना चाहिए जिससे ध्वनी प्रदूषण होता है। शादी विवाह में आतिशबाजी पर भी रोक लगाने जरूरी है क्योंकि आधी रात के वक्त विवाह समारोह में फोड़े जाने वाली आतिशबाजी बहुत ही तकलीफ देह होती है उन लोगों के लिए जो लोग दिन भर काम कर रात को आराम से सोना चाहते हैं ,वे बुजुर्ग जो बिमार है।

हम आम लोगों को ही समझना होगा कि , प्रदुषण से कैसे बचें ,अपने बुजुर्ग अपने बच्चों का कैसे ध्यान रखें, इसलिए गाजों बाजों का विरोध करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य हो गया जिनसे ध्वनी प्रदूषण फैलता है। वायु प्रदूषण ध्वनि प्रदूषण की तरह ही खतरनाक स्टेज में जल प्रदूषण भी है पृथ्वी पर बढ़ते कचरे के कारण जल का का भी प्रदूषण लेवल बढ़ा हुआ है। भारत की लगभग सभी नदियां नालों का रूप ले चुकी हैं जो सोचने मात्र से शर्मनाक लगता है हम शिक्षित लोग पृथ्वी पर हर जरूरी और सुंदर चीजों को प्रदूषित कर रहे हैं। भौतिकवादी जिंदगी को बढ़ावा देने चक्कर में हम जिस जमीन पर रह रहे हैं उसी का नाश कर रहे हैं अगर अब नहीं जागे तो बहुत देर हो जाएगी । सरकार को तथा आम जनता को मिलकर इस दिशा में कदम उठाना होगा।

जिस भी कार्य या वस्तु से प्रदूषण फैलता है उससे बचना होगा।अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे ,रोजमर्रा की जिंदगी में वैसे वाहन वैसे संसाधन का प्रयोग करना होगा जिससे प्रदूषण नही होता है इसमें बैटरी वाले वाहन बेहतर विकल्प है। सरकार को वैसे कलकारखानो पर भी पाबंदी लगानी होगी जो प्रदूषण के गाइडलाइन की अनदेखी करते है। आम जनता एवं सरकार की जागरूकता से ही प्रदूषण की समस्या से मुक्ति मिल सकती है। वायु प्रदूषण, ध्वनी प्रदूषण, जल प्रदूषण ,मृदा प्रदूषण सब पर रोक लगाने के लिए ठोस नीति के साथ ठोस कार्यवाई भी आवश्यक है।

लेखिका: सुनीता कुमारी
पूर्णियाँ ,बिहार

आज के कार्टून

शरीर

जग्गी वासुदेव

शायद आप नहीं चाहेंगे कि मैं ऐसे शब्द कहूं, लेकिन अपने जीवन के हर क्षण में, आप अपनी मृत्यु के थोड़ा पास पहुंच रहे हैं। मैं आपको दीर्घायु होने का आशीर्वाद दूंगा पर मृत्यु तो हर मिनट आपके पास आ ही रही है। हमारे जीवन के जो दो सबसे महत्वपूर्ण आयाम हैं, वे हैं समय और ऊर्जा। आप अपनी ऊर्जाओं को अच्छे से मैनेज करते हैं, तो आपकी ऊर्जाओं के बढ़ जाने से आपके अनुभव में समय भी ज्यादा अच्छा गुजरेगा। जब आपके जीवन के अनुभव मधुर होते हैं, तो वे जितने ज्यादा मधुर होते जाएंगे, उतनी ही ज्यादा तेजी से आपको समय बीतता मालूम पड़ेगा। आप सुबह उठेंगे और आपको पता चलने से पहले दिन पूरा भी हो जाएगा- इसका सीधा अर्थ है कि सब कुछ अच्छा है, आप बढ़िया स्थिति में हैं। आपका समय जल्दी नहीं गुजरता, भारी मालूम होता है तो इसका अर्थ है कि आपकी स्थिति कष्टप्रद है, खराब है। आपका यह समझना महत्वपूर्ण है कि इस धरती पर, आज के समय में, एक मनुष्य के रूप में आपके शरीर के अंदर समय किस तरह चल रहा है, या आप समय का अनुभव किस प्रकार कर रहे हैं। आपके शरीर के कई आयाम इस धरती पर समय को तय करने के मूल भागों के साथ तालमेल में हैं। हमारे लिए समय का मूल माप तो पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर घूमना ही है, जो एक वर्ष है। चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूम रहा है और इसका एक चक्र एक महीना है। लेकिन समय का सबसे मूल माप पृथ्वी के अपनी धुरी पर चक्कर लगाने से मिलता है। पृथ्वी के एक चक्कर को हम एक दिन कहते हैं। पृथ्वी की भूमध्य रेखा 21600 नॉटिकल मील लंबी है। एक दिन में आपके द्वारा ली गई सांसों की संख्या भी 21600 ही है। इसे 1440 से भाग करें- जो हर दिन के मिनटों की संख्या है- तो उत्तर मिलता है 15। इसका अर्थ है कि आप हर मिनट लगभग 15 सांसें ले रहे हैं, तो आप पृथ्वी के अपनी धुरी पर चक्कर लगाने के साथ पूरी तरह तालमेल में हैं। आपके हृदय की धड़कनें प्रति मिनट 70 से 72 के बीच हैं, तो आपका हृदय भी आप की सांस के साथ तालमेल में है, सांस पृथ्वी के चक्करों के साथ तालमेल में है। अपनी शारीरिक व्यवस्था में तालमेल लाने का यह सरल उपाय है। आप यह करते हैं, तो आपके शरीर की बाध्यताएं, शरीर की मजबूरियां छूट जाएंगी।

सू-दोकू नवताल -1981

	9				4			
8	4			6		9		5
5		6	8	2		3		
	1	5	6	3			9	7
3	6			9	7	1	4	
		1		4	8	7		6
9		4		7			2	1
			2				8	

सू-दोकू -1980 का हल

8	5	4	7	3	2	6	1	9
6	7	1	9	5	4	3	2	8
2	9	3	8	6	1	7	5	4
4	3	9	2	1	7	8	6	5
5	6	2	3	8	9	4	7	1
7	1	8	6	4	5	9	3	2
3	2	6	5	9	8	1	4	7
9	4	7	1	2	6	5	8	3
1	8	5	4	7	3	2	9	6

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3 X 3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।

फिल्म वर्ग पहेली-1981

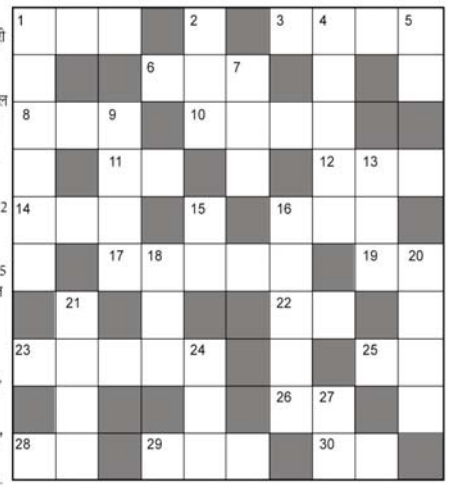

बायें से दायें:-

1. जतिन ग्रेवाल, यश पाठक, नेहा की 'चलती है पुरवाई' गीतवाली फिल्म-3
3. 'मेरा मन तेरा प्यासा' गीत वाली देव आनंद, जाहिदा, जाहिरा की फिल्म-4
6. सनी, मीनाक्षी की सोचना क्या जो भी होगा' गीत वाली फिल्म-3
8. 'कब तक हुज़ूर रूठे रहोगे' गीत वाली जीतेंद्र, बबीता की फिल्म-3
10. धर्मेन्द्र, हेमा, रीना राय की 'नागिन सा रूप है तेरा' गीत वाली फिल्म-4
11. 'सपने में मिलती है' गीत वाली डी. चक्रवर्ती, मनोज, उर्मिला की फिल्म-2
12. रघुवीर यादव, कुणालकपूर, तब्बू, नादिरा बब्बर की 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' गीत वाली फिल्म-3
14. 'क्या करे क्या ना करें' गीत वाली जैकी श्रॉफ, उर्मिला की फिल्म-3
16. सनी देओल, करिश्मा की 'छम्मक छल्लो जरा धीरे' गीत वाली फिल्म-3
17. जैकी श्रॉफ, संजय, माधुरी की फिल्म-5
19. फारूख शेख, नसीरूद्दीनशाह, दीप्ति नवल की सई परांजपे निर्देशित एक फिल्म-2
22. 'कंधों से मिलते हैं कंधे' गीत वाली अमिताभ, रितिक, प्रीति की फिल्म-2
23. राकेश रोशन, रेखा की 'सुन सुन सुन दीदी तेरे लिये' गीत वाली फिल्म-5
25. 'पर्दे में कोई बैठा है' गीत वाली अमजद खान, विनोद मेहरा, बिंदिया गोस्वामी की फिल्म-2
26. संजय दत्त, सलमान खान, खोना की 'सुनो गौर से' गीत वाली फिल्म-2
28. 'जिसका मुझे था इंतजार' गीत वाली अमिताभ, जीनत अमान की फिल्म-2
29. मिलिंद सोमण, विक्रम सलूजा, किरण झवेरी की फिल्म-3
30. फिल्म 'रफूचक्कर' में नायिका थी-2

ऊपर से नीचे:-

1. 'मेरा नाम है चमेली' गीत वाली संजीव कुमार, नाजिमा, कुमकुम की फिल्म-2,2,2
2. तुषार कपूर, अंतरा माली की 'मैं लव तुमसे' गीत वाली फिल्म-3
4. 'सिर्फतुम ही तो हो जिसपे' गीत वाली शम्मीकपूर, साधना की फिल्म-5
5. अभिषेक बच्चन, भूमिका चावला की 'दिल में जो बात' गीत वाली फिल्म-2
7. 'मधुबन में जो कन्हैया' गीत वाली आमिरखान, ग्रेसीसिंह की फिल्म-3
9. संजयखान, बबीता की 'आ लगजा गले' गीत वाली फिल्म-2,2
13. 'रूखी सूखी रोटी' गीत वाली अनिल कपूर, रानी मुखर्जी की फिल्म-3
15. 'क्या सही प्यार है' गीत वाली फिल्म 'रॉकी' में संजयदत्त, के साथ नायिका कौन थी-3
16. जीतेंद्र, श्रीदेवी की 'आई लव यू आई लव यू' गीत वाली फिल्म-5
18. 'ओफ्फो जलता है बुझता है' गीत वाली सनी, सोहेल, सुनील, जॉन अब्राहम, नीहीद की फिल्म-3
20. संजय दत्त, माधुरी दीक्षित की 'तम्मा तम्मा लोगे' गीत वाली फिल्म-4
21. 'लो आगई उनकी याद' गीत वाली मनोज कुमार, आशा पारेख की फिल्म-1,3
24. अक्षय कुमार, करीना कपूर की 'तूने कहा जब से हाँ' गीत वाली फिल्म-3
27. 'और क्या अहद ए वफा' गीत वाली सनी देओल, अमृतासिंह की फिल्म-2

फिल्म वर्ग पहेली-1980

रुद्राभिषेक
मोक्ष प्राप्ति का साधन

भोलेनाथ अपने नाम के अनुरुप बहुत भोले हैं। भगवान शिव एक लोटा जल से भी प्रसन्न होकर अपने भक्तों के सारे कष्ट हर लेते हैं। शिवलिंग पर जलाभिषेक करने से व्यक्ति की सारी मनोकामनाएं पूर्ण होती है। वहीं रुद्राभिषेक करने से व्यक्ति की कुंडली से पातक कर्म एवं महापातक भी जलकर भस्म हो जाते हैं। कहा जाता है कि भगवान शिव के पूजन से सभी देवताओं की पूजा स्वत: हो जाती है। हमारे शास्त्रों में विविध कामनाओं की पूर्ति के लिए रुद्राभिषेक के पूजन के निमि अनेक द्रव्यों तथा पूजन सामग्री को बताया गया है। विशेष अवसर पर या सोमवार, प्रदोष और शिवरात्रि आदि पर्व के दिनों में मंत्र, गोदुग्ध या अन्य दूध मिलाकर अथवा केवल दूध से भी अभिषेक किया जाता है। विशेष पूजा में दूध, दही, घृत, शहद और चीनी से अलग-अलग अथवा सबको मिलाकर पंचामृत से भी अभिषेक किया जाता है। इस प्रकार विविध द्रव्यों से शिवलिंग का विधिवत अभिषेक करने पर अभीष्ट कामना की पूर्ति होती है। वहीं रुद्राभिषेक से कालसर्प योग, गृहलेश, व्यापार में नुकसान, शिक्षा में रुकावट सभी कार्यों की बाधाएं भी दूर होती हैं।

भगवान शिव के रुद्राभिषेक के लाभ

- शिवलिंग का जलाभिषेक करने से वर्षा होती है। कुशोदक अर्थात ऐसा जल जिसमें कुश घास की पत्तियां छोड़ी गई हों से रुद्राभिषेक करें। इससे असाध्य रोगों से मुक्ति मिलती है।
- दही से रुद्राभिषेक करने से भवन-वाहन की प्राप्ति होती है।
- शिवलिंग पर गन्ने के रस से अभिषेक करने पर अपार लक्ष्मी मिलती है।
- शहद व घी से शिवलिंग पर रुद्राभिषेक करने से धन में वृद्धि होती है।
- तीर्थ के जल से शिवलिंग पर रुद्राभिषेक करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- रोगों से मुक्ति हेतु इत्र से अभिषेक करने से लाभ होता है।
- दूध से रुद्राभिषेक करने से पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।
- शीतल जल या गंगा जल से रुद्राभिषेक करने से ज्वर से शांति मिलती है।
- सहस्रनाम-मंत्रों का उच्चारण करते हुए घृत की धारा से रुद्राभिषेक करने पर वंश का विस्तार होता है।
- दूध में शक्कर मिलाकर रुद्राभिषेक करने के मंदबुद्धि भी विद्वान हो जाता है।
- शत्रुओं से परेशान हैं तो सरसों के तेल से शिवलिंग पर अभिषेक करने से दुश्मन पराजित होंगे।

कुंभ नगरी हरिद्वार के बारे में रोचक बाते

उत्तराखंड का एक शहर हरिद्वार जहां लगता है विश्व प्रसिद्ध कुंभ मेला। गंगा के तट पर बसा यह नगर बहुत ही खूबसूरत और प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण है। हरिद्वार के संबंध में रोचक बातें।

- हरिद्वार का प्राचीन नाम है मायानगर या मायापुरी। हरिद्वार अर्थात हरि के घर का द्वार। इस गंगा द्वार भी कहते हैं। गंगा हरि के घर से निकलकर यहां मैदानी इलाके में पहुंचती है। हरि अर्थात बद्रीनाथ विष्णु भगवान जो पहाड़ों पर स्थित है। हरिद्वार का एक भाग आज भी 'मायापुरी' नाम से प्रसिद्ध है।
- हरिद्वार को भारत की सात प्राचीन नगरियों में से एक माना जाता है। पुराणों में इसकी सप्त मोक्षदायिनी पुरियों में गणना की जाती थी।
- हरिद्वार गंगा के पावन तट पर बसा है। कहा जाता है समुद्र मंथन से प्राप्त किया गया अमृत यहाँ हरिद्वार के हर की पैड़ी स्थान पर गिरा था। इसीलिए यहां पर कुंभ पर्व का आयोजन होता है।
- हरिद्वार को 3 देवताओं ने अपनी उपस्थिति से पवित्र किया है ब्रह्मा, विष्णु और महेश। गंगा के उत्तरी भाग में बसे हुए 'बदरीनारायण' तथा 'केदारनाथ' नामक भगवान विष्णु और शिव के पवित्र तीर्थों के लिए इसी स्थान से आगे मार्ग जाता है। इसीलिए इसे 'हरिद्वार' तथा 'हरद्वार' दोनों ही नामों से पुकारा जाता है। वास्तव में इसका नाम 'गेटवे ऑफ द गॉड्स' है।
- कहा जाता है कि भगवान विष्णु ने हर की पैड़ी के ऊपरी दीवार में पत्थर पर अपना पैर प्रिंट किया है, जहां पवित्र गंगा हर समय उसे छूती है।
- कनखल हरिद्वार का सबसे प्राचीन स्थान है। इसका उल्लेख पुराणों में मिलता है। यह स्थान हरिद्वार से लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। वर्तमान में कनखल हरिद्वार की उपनगरी के रूप में जाना जाता है। कनखल का इतिहास महाभारत और भगवान शिव से जुड़ा हुआ है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कनखल ही वो जगह है जहां राजा दक्ष ने प्रसिद्ध यज्ञ किया था और सती ने अपने पिता द्वारा भगवान शिव का अपमान करने पर उस यज्ञ में खुद को दाह कर लिया था।
- हरिद्वार को पंचपुरी भी कहा जाता है। पंचपुरी में मायादेवी मंदिर के आसपास के 5 छोटे नगर समिलित हैं। कनखल उनमें से ही एक है।
- हरिद्वार में शांतिकुंभ स्थान पर विश्वामित्र ने घोर तप किया था तो दूसरी ओर सप्तऋषि आश्रम में सप्तऋषियों ने तपस्या की थी। यह स्थान कई ऋषि और मुनियों की तपोभूमि रहा है। इसके अलावा श्रीराम के भाई लक्ष्मण जी ने हरिद्वार में जूट की रस्सियों के सहारे नदी को पार किया था, जिसे आज लक्ष्मण झुला कहा जाता है। कपिल मुनि ने भी यहां तपस्या की थी। इसलिए इस स्थान को कपिलास्थान भी कहा जाता है। कहते हैं कि राजा श्वेत ने हर की पौड़ी पर भगवान ब्रह्मा की तपस्या की थी। राजा की भति से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने जब वरदान मांगने को कहा तो राजा ने वरदान मांगा कि इस स्थान को ईश्वर के नाम से जाना जाए। तब से हर की पौड़ी के जल को ब्रह्मकुण्ड के नाम से भी जाना जाने लगा।

यहां शक्ति त्रिकोण है। शति त्रिकोण अर्थात पहला मनसा देवी का खास स्थान, दूसरा चंडी देवी मंदिर और तीसरा माता सती का शक्तिपीठ जिसे मायादेवी शक्तिपीठ कहते हैं। यहां माता सती का हृदय और नाभि गिरे थे। माया देवी को हरिद्वार की अधिष्ठात्री देवी माना जाता है।

हरिद्वार में ही विश्व प्रसिद्ध गंगा आरती होती है। हरिद्वार की तर्ज पर बाद में गंगा आरती का आयोजन ऋषिकेश, वाराणसी, प्रयाग और चित्रकूट में भी होने लगा। हरिद्वार की गंगा आरती को देखते हुए 1991 में वाराणसी में दशाश्वमेध घाट पर प्रारंभ हुई थी।

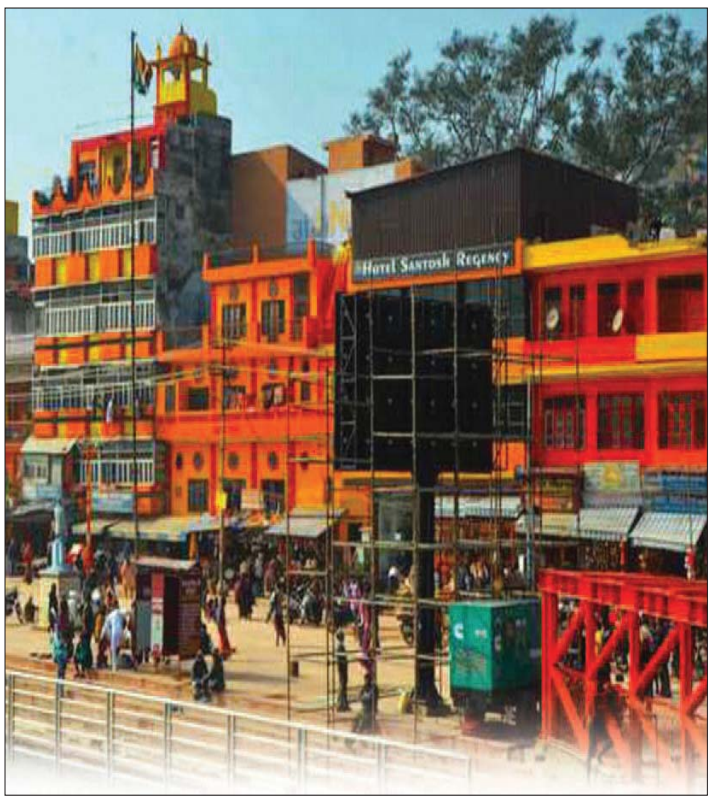

वास्तु दोषों का निवारण करती है गाय

वास्तु के अनुसार अगर भवन, घर का निर्माण करना हो यदि वहां पर बछड़े वाली गाय को लाकर बांधा जाए तो वहां संभावित वास्तु दोषों का स्वत: निवारण हो जाता है। वह कार्य निर्विघ्न पूरा होता है और समापन तक आर्थिक बाधाएं नहीं आतीं। गाय के रूप में पृथ्वी की करुण पुकार और विष्णु से अवतार के लिए निवेदन के प्रसंग बहुत प्रसिद्ध हैं। 'समरांगण सूत्रधार' जैसा प्रसिद्ध वृहद् वास्तु ग्रंथ गो रूप में पृथ्वी-ब्रह्दि के समागम-संवाद से ही आरंभ होता है। वास्तुग्रंथ 'मयमतम' में कहा गया है कि भवन निर्माण का शुभारंभ करने से पूर्व उस भूमि पर ऐसी गाय को लाकर बांधना चाहिए जो सवत्सा या बछड़े वाली हो।

शास्त्रों में लिखा हैं की जब नवजात बछड़े को जब गाय दुलारकर चाटती है तो उसका फेन भूमि पर गिरकर उसे पवित्र बनाता है और वहां होने वाले समस्त दोषों का निवारण हो जाता है। यही मान्यता वास्तुप्रदीप, अपराजितपृच्छा आदि में भी आई है। महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा गया है कि गाय जहां बैठकर निर्भयतापूर्वक सांस लेती है, उस स्थान के सारे पापों को खींच लेती है

निविष्ट गोकुलं यत्र श्वांस मुंचति निर्भयम।
विराजयति तं देशं पापं चास्याप कर्षति॥

यह भी कहा गया है कि जिस घर में गाय की सेवा हो, वहां पुत्र-पौत्र, धन, विद्या, सुखादि जो भी चाहिए, मिल सकता है। यही मान्यता अत्रिसंहिता में भी आई है। अत्रि ने तो यह भी कहा है कि जिस घर में सवत्सा धेनु नहीं हो, उसका मंगल-मांगल्य कैसे होगा? गाय का घर में पालन करना बहुत लाभकारी है। ऐसे घरों में सर्वबाधाओं और विघ्नों का निवारण हो जाता है। जिस घर में गाय रहती है उसमें रहने वाले बच्चों में भय नहीं रहता। विष्णु पुराण में कहा गया है कि जब श्रीकृष्ण पूतना के दुग्धपान से डर गए तो नंद दंपती ने गाय की पूंछ घुमाकर उनकी नजर उतारी और भय का निवारण किया। सवत्सा गाय के शकुन लेकर जाने से कार्य सिद्ध होता है। पद्मपुराण, और कूर्मपुराण में कहा गया है कि कभी गाय को लांघकर नहीं जाना चाहिए। किसी भी साक्षात्कार, उच्च अधिकारी से भेंट आदि के लिए जाते समय गाय के रंभाने की ध्वनि कान में पड़ना शुभ है। संतान लाभ के लिए घर में गाय की सेवा अच्छा उपाय कहा गया है। शिवपुराण व स्कंदपुराण में कहा गया है कि गो सेवा और गोदान से यम का भय नहीं रहता। गाय के पांव की धूली का भी अपना महत्व है। यह पाप विनाशक है, ऐसा गरुड़पुराण और पद्मपुराण का मत है।

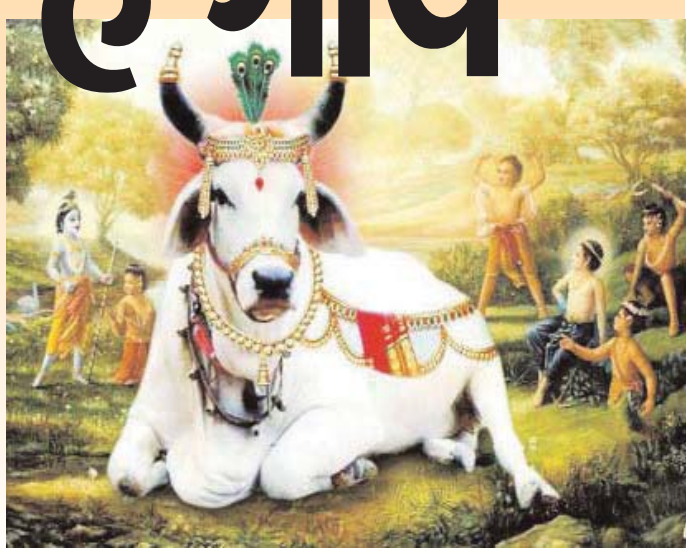

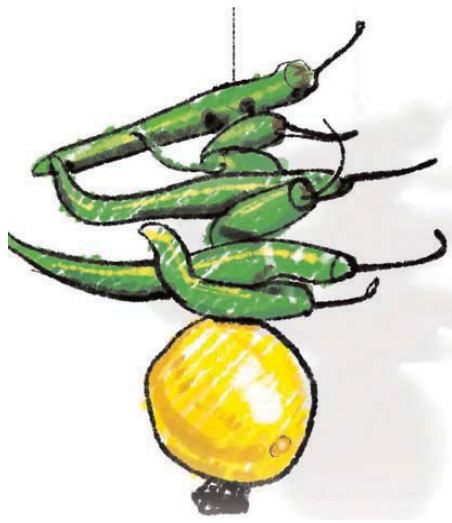

पाखंड और अंधविश्वास से बचा सकती है ऐसी सोच

आप किसी भी शहर में हों, आपको सुनने को मिलेगा कि कोई अलौकिक बाबा, योगपुरुष या फकीर का आगमन इस शहर में हो रहा है। उनके दर्शन या स्पर्श मात्र से असाध्य से असाध्य बीमारियां पलक झपकते ही गायब हो जाती हैं। इच्छुक व्यक्ति के मिलने के लिए बाबाओं के सारे अते-पते के पैंफ्लेट शहर की दीवारों पर चिपके मिलते हैं। बाबाओं को मालूम है कि हमारे यहां समस्याग्रस्त लोगों की कमी नहीं है। एक ढूंढो, लाख मिल जाते हैं। एक बार मैं भी आजमाने के खयाल से मुंबई में एक बाबा से मिलने चला गया। लेकिन वह मुझसे नाराज इसलिए हो गए क्योंकि मैंने उन्हीं की बात को दोहराते हुए कह दिया कि जब ईश्वरीय इच्छा से सब कुछ होना है तो फिर लोग आपके पास क्यों आएं वे खुद भगवान से अपने अच्छे दिन के लिए प्रार्थना करेंगे। अनेक असाध्य रोगियों से उन्हें कहते हुए सुना कि यह केस वे नहीं ले सकते क्योंकि ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध जाना होगा। इसका सीधा मतलब है कि उनका पाखंड जहां चल जाता है, वे वहां अपना धंधा करने में कामयाब हो जाते हैं। असाध्य रोगियों पर ईश्वर की इच्छा लाद देते हैं। यह सिर्फ एक घटना नहीं, बल्कि हमारे देश में होने वाली घटनाओं की लंबी शृंखला की एक कड़ी है। कहीं भभूति, कहीं स्पर्श मात्र से तो कहीं मंत्र से शुद्ध किया हुआ पानी पिलाने से समस्याओं और रोगों को ठीक करने की गारंटी कब से दी जाती रही है। आजकल योग-ध्यान का विज्ञापन भी इसी सस्ती भूमिका पर उतर आया है। कोई यह सोचने के लिए तैयार नहीं है कि भारत में जब इतने महात्मा, बाबा और योगीजन बीमारियों से मुक्त करने का दावा कर रहे हैं तो बड़े-बड़े अस्पतालों, डॉक्टरों और इन पर होने वाले भारी भरकम खर्च की या जरूरत है लेकिन जब हम इनके जीवन के भीतर झांकते हैं तो तस्वीर का एक दूसरा बड़ा ही दयनीय और निराशाजनक पहलू सामने आता है। दूसरों को रोगमुत करने वाला खुद डॉक्टरों की शरण में होता है। आज शरीर-शास्त्री तथा चिकित्सा-विज्ञान के पंडित इस तथ्य से सहमत हैं कि अधिकांश रोगों का कारण हमारा मन है। मानसिक आवेग और उद्वेग बहुत प्रकार के रोगों को जन्म देते हैं। कुछ रोग आज के व्यस्तता बहुल वातावरण से उत्पन्न दबावों और तनावों की वजह से होते हैं। ये रोग मनोवैज्ञानिक हैं, इसलिए इनका इलाज भी उसी भूमिका पर होना आवश्यक होता है। इसी का फायदा बाबा उठा लेते हैं। आस्थाशील लोग एक मनो-विभ्रम से निकलकर दूसरे मनो-विभ्रम में पड़ जाते हैं। चूंकि यह सुखद विभ्रम होता है इसलिए साधारण आदमी के लिए यह चमत्कार बन जाता है। एक कथित चमत्कारिक घटना को आधार बनाकर दस नई कथाओं को खड़ा करने में भत लोग माहिर होते हैं। इस तरह यह सिलसिला आगे चलता रहता है। सुशिक्षित, बुद्धिमान लोग भी इनकी गिरत में आ जाते हैं। लेकिन आज इस स्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण होना आवश्यक है। तभी पाखंडों और अंधविश्वासों को पनपने से रोका जा सकता है। श्रद्धा का शोषण शताब्दियों से किया जाता रहा है और आज भी हो रहा है। इन स्थितियों को समझने के साथ-साथ मनोविभ्रम से भी निकलना बहुत जरूरी है।

सेंसेक्स की शीर्ष सात कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 1.29 लाख करोड़ बढ़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)।

बीते सप्ताह सेंसेक्स की शीर्ष 10 में से सात कंपनियों के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) 1,29,047.61 करोड़ रुपए की बढ़ोतरी हुई। सबसे अधिक लाभ में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज रही। सप्ताह के दौरान टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, इन्फोसिस, हिंदुस्तान यूनिलीवर, एचडीएफसी, बजाज फाइनेंस और भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के बाजार पूंजीकरण में इजाफा हुआ। वहीं इस दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज, आईसीआईसीआई बैंक और भारती एयरटेल का बाजार मूल्यांकन घट गया। समीक्षाधीन सप्ताह में टीसीएस का बाजार पूंजीकरण 71,761.59 करोड़ रुपए बढ़कर 13,46,325.23 करोड़ रुपए, इन्फोसिस का बाजार मूल्यांकन 18,693.62 करोड़ रुपए की वृद्धि के साथ 7,29,618.96 करोड़ रुपए, बजाज फाइनेंस की बाजार हैसियत 16,082.77 करोड़ रुपए बढ़कर 4,26,753.27 करोड़ रुपए पर और एचडीएफसी बैंक की हैसियत 12,744.21 करोड़ रुपए की बढ़ोतरी के साथ 8,38,402.80 करोड़ रुपए, एचडीएफसी के बाजार मूल्यांकन बढ़कर 5,393.86 करोड़ रुपए बढ़कर 5,01,562.84 करोड़ रुपए, भारतीय स्टेट बैंक का मूल्यांकन 2,409.65 करोड़ रुपए बढ़कर 4,22,312.62 करोड़ रुपए रहा। हिंदुस्तान यूनिलीवर को सप्ताह के दौरान 1,961.91 करोड़ रुपए का लाभ हुआ और उसका बाजार पूंजीकरण 5,50,532.73 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। इस रुख के विपरीत भारती एयरटेल का बाजार मूल्यांकन 10,489.77 करोड़ रुपए घटकर 3,94,519.78 करोड़ रुपए रह गया। आईसीआईसीआई बैंक की बाजार हैसियत 3,686.55 करोड़ रुपए घटकर 4,97,353.36 करोड़ रुपए और रिलायंस इंडस्ट्रीज की हैसियत 2,537.34 करोड़ रुपए के नुकसान से 15,27,572.17 करोड़ रुपए रह गई। शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर कायम रही। उसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, इन्फोसिस, हिंदुस्तान यूनिलीवर, एचडीएफसी, आईसीआईसीआई बैंक, बजाज फाइनेंस, एसबीआई और भारती एयरटेल का स्थान रहा।

रिजर्व बैंक की मौद्रिक समीक्षा, वृहद आर्थिक आंकड़ों से तय होगी बाजारों की दिशा

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक की मौ द्रिक समीक्षा, वृहद आर्थिक आंकड़ों और कोरोना वायरस के नए स्वरूप ओमीक्रोन को लेकर अनिश्चितता की वजह से इस सप्ताह शेयर बाजारों में उतार-चढ़ाव रहने के आसार हैं। सप्ताह के दौरान रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक है, जो मुख्य रूप से शेयर बाजारों को दिशा देगी। विश्लेषकों ने यह राय जताई है। विश्लेषकों का कहना है कि यह सप्ताह काफी घटनाक्रमों वाला रहेगा। मौद्रिक समीक्षा के अलावा सप्ताह के दौरान कई वृहद आर्थिक आंकड़े भी आने हैं। बाजार के जानकारों का कहना है कि ओमीक्रोन को लेकर काफी खबरें आ रही हैं, जो बाजार में अनिश्चितता पैदा कर रही हैं। वहीं घरेलू मोर्चे पर मौद्रिक समीक्षा बैठक महत्वपूर्ण होगी। केंद्रीय बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की बैठक के नतीजे आठ दिसंबर को आएंगे। इस सप्ताह औद्योगिक उत्पादन (आईआईपी) और मुद्रास्फीति के आंकड़े भी आने वाले हैं। हालांकि, ये आंकड़े शुक्रवार को बाजार बंद होने के बाद जारी किए जाएंगे। भारत में ओमीक्रोन का पहला मामला सामने आने के बाद शुक्रवार को शेयर बाजारों में गिरावट आई थी। विश्लेषकों का अनुमान है कि इस सप्ताह बाजार में काफी उतार-चढ़ाव रहेगा। सप्ताह के दौरान कई महत्वपूर्ण आर्थिक आंकड़े आने हैं। बाजार भागीदारों की नजरें रिजर्व बैंक की मौद्रिक समीक्षा पर रहेंगी। वृहद आर्थिक मोर्चे पर 10 दिसंबर को आईआईपी तथा मुद्रास्फीति के आंकड़े आने हैं। उन्होंने कहा कि कई आर्थिक आंकड़ों तथा घटनाक्रमों की वजह से बाजार भागीदारों को इस सप्ताह में उतार-चढ़ाव के लिए तैयार रहना चाहिए। बाजार के खिलाड़ी रिजर्व बैंक की मौद्रिक समीक्षा के नतीजों से चीजों को समझने की कोशिश करेंगे। पिछले सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 589.31 अंक के लाभ में रहा। रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति की बैठक इस सप्ताह होने वाली है। आने वाले दिनों में यह बाजार के लिए एक प्रमुख उत्प्रेरक रहेगी।

आईटी क्षेत्र की स्टार्टअप फारआई को अगले एक साल में 'यूनिकॉर्न' बनने की उम्मीद

नई दिल्ली (एजेंसी):

सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र की स्टार्टअप फारआई को अगले छह से 12 माह के भीतर यूनिकॉर्न (एक अरब डॉलर से अधिक का मूल्यांकन) का दर्जा हासिल करने की उम्मीद है। कंपनी ने कहा है कि उसके राजस्व में जिस तरह से बढ़ोतरी हो रही है उससे वह जल्द यूनिकॉर्न की श्रेणी में आ जाएगी। विशेषरूप से उसका अमेरिकी कारोबार तेजी से बढ़ रहा है। फारआई के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) और सह-संस्थापक कुशल नाहटा ने को बताया कि कंपनी ने अमेरिका और यूरोप में अपनी टीम का आकार दोगुना कर लिया है। इसके अलावा वृद्धि को समर्थन के लिए पिछली दो तिमाहियों में अपनी इंजीनियरिंग टीम में 25 सदस्यों की वृद्धि की है। ई-कॉमर्स केंद्रित सॉफ्टवेयर-एज-ए-सर्विस (सास) कंपनी ने श्रृंखला-ई वित्तपोषण दौर में टीसीवी और ड्रैगनियर इन्वेस्टमेंट ग्रुप की अगुवाई में विभिन्न निवेशकों से 10 करोड़ डॉलर जुटाए हैं। मौजूदा निवेशकों एट रोड्स वेंचर्स, फंडामेंटम और हनीवेल ने भी इस दौर में भाग लिया। नाहटा ने कहा, ''वित्तपोषण के अगले दौर में हम इसके नजदीक होंगे। मुझे लगता है कि अगले 6-12 महीनों में हम यूनिकॉर्न होंगे। यह सिर्फ एक दर्जा है, जो आपको मिलता है। इससे कारोबार के मोर्चे पर कुछ भी नहीं बदलता है।'' उन्होंने कहा कि 10 करोड़ डॉलर का वित्तपोषण कंपनी के यूनिकॉर्न बनने या उसको पार करने के लिए पर्याप्त होगा।

इस साल आईआईटी खड़गपुर ने प्लेसमेंट का रिकार्ड तोड़ा

कोलकाता। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-खड़गपुर ने इस साल आईआईटी के इतिहास में सबसे ज्यादा प्लेसमेंट ऑफर दर्ज किए हैं, जिसमें अधिकतम पैकेज 2.40 करोड़ रुपए प्रति वर्ष का है। एक बयान के अनुसार आईआईटी-खड़गपुर ने 1,100 से अधिक प्लेसमेंट ऑफर दर्ज किए हैं। मौजूदा महामारी की स्थिति के बावजूद आईआईटी-खड़गपुर में बड़ी संख्या में प्री-प्लेसमेंट ऑफर (पीपीओ) आए, जो भारत के अन्य सभी शीर्ष उच्च शैक्षणिक संस्थानों में सबसे अधिक संख्या है। छात्रों को 35 अंतरराष्ट्रीय ऑफर मिले। दो प्रमुख नियोक्ताओं ने 2-2.4 करोड़ रुपए प्रति वर्ष के पैकेज के साथ दो बड़े प्रस्ताव दिए। संस्थान का कहना है कि अब तक हमारे छात्रों को एक करोड़ रुपए के पैकेज वाले 20 से ज्यादा ऑफर मिले हैं। भर्ती करने वाली मुख्य कंपनियों में क्वालकॉम, माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, उबर, इंटेल, अमेरिकन एक्सप्रेस, हनीवेल, सैमसंग और आईबीएम थी। आईआईटी-खड़गपुर के एक प्रवक्ता ने कहा कि सॉफ्टवेयर, एनालिटिक्स, कंसल्टिंग, कोर इंजीनियरिंग, बैंकिंग, फाइनेंस समेत सभी क्षेत्रों की 100 से अधिक कंपनियों ने भर्ती प्रक्रिया में हिस्सा लिया।

वित्त वर्ष 2020-21 के लिए अब तक तीन करोड़ से अधिक आयकर रिटर्न दाखिल: वित्त मंत्रालय

नयी दिल्ली, वित्त मंत्रालय ने रविवार को कहा कि वित्त वर्ष 2020-21 के लिए अब तक तीन करोड़ से अधिक आयकर रिटर्न (आईटीआर) दाखिल किए जा चुके हैं। मंत्रालय ने अभी तक आईटीआर दाखिल नहीं करने वाले करदाताओं से अपना रिटर्न जल्द से जल्द दाखिल करने को भी कहा है। एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि प्रतिदिन दाखिल किए जाने वाले आयकर रिटर्न की संख्या चार लाख से अधिक हो गई है और 31 दिसंबर की विस्तारित तारीख नजदीक आने के साथ इसमें और तेजी आ रही है। विभाग ई-मेल एवं एसएमएस भेजने के अलावा मीडिया अभियानों के माध्यम से करदाताओं को अपना आयकर रिटर्न समय पर दाखिल करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। विभाग ने अभी तक आकलन वर्ष 2021-22 के लिए आयकर रिटर्न दाखिल नहीं करने वाले करदाताओं से अनुरोध किया है कि वे अंतिम समय की भीड़ से बचने के लिए जल्द से जल्द अपना आईटीआर दाखिल करें। वित्त मंत्रालय ने कहा, ''आयकर विभाग सभी करदाताओं से आग्रह करता है कि वे अपने फॉर्म 26 एएस और वार्षिक सूचना ब्योरे (एआईएस) को ई-रिटर्न दाखिल करने के पोर्टल के जरिये देखें, जिससे उन्हें पता चल सकेगा कि स्रोत पर कर कटौती (टीडीएस) और कर भुगतान सही है या नहीं।'' बयान के मुताबिक, आकलन वर्ष 2021-22 के लिए दाखिल रिटर्न का आंकड़ा 3.03 करोड़ पर पहुंच गया है। इसमें 58.98 प्रतिशत आईटीआर 1 (1.78 करोड़), आठ प्रतिशत आईटीआर 2 (24.42 लाख), 8.7 प्रतिशत आईटीआर 3 (26.58 लाख) हैं।) और 23.12 प्रतिशत आईटीआर 4 (70.07 लाख) हैं। इसके अलावा 2.14 लाख आईटीआर 5 , 91 हजार आईटीआर 6 और 15 हजार आईटीआर 7 दाखिल किए गए हैं।

नए साल में कार खरीदना होगा महंगा! टाटा मोटर्स, होंडा और रेनो बढ़ाएंगी वाहनों के दाम

(एजेंसी):

उत्पादन लागत में वृद्धि के बीच टाटा मोटर्स, होंडा और रेनो जैसी वाहन कंपनियां नए साल यानी जनवरी से अपने वाहनों के दाम बढ़ाने पर विचार कर रही हैं। बाजार की अग्रणी कंपनी मारुति सुजुकी और लग्जरी कार कंपनी ऑडी और मर्सिडीज-बेंज अगले महीने से अपने वाहनों की कीमतों में बढ़ोतरी की घोषणा पहले ही कर चुकी हैं। मारुति ने कहा है कि जनवरी 2022 से उसके वाहनों के दाम बढ़ेंगे। अलग-अलग मॉडलों के दामों में बढ़ोतरी भिन्न होगी। वहीं मर्सिडीज-बेंज ने कहा है कि उसके चुनिंदा मॉडलों के दाम दो प्रतिशत तक बढ़ जाएंगे। दूसरी ओर, ऑडी ने एक जनवरी, 2022 से अपनी समूची मॉडल श्रृंखला की कीमतों में तीन प्रतिशत तक की वृद्धि की घोषणा की है। कीमत वृद्धि के बारे में संपर्क करने पर टाटा मोटर्स के अध्यक्ष (यात्री वाहन कारोबार) शैलेश चंद्रा ने कहा, ''जिंसों के दाम, कच्चे माल और अन्य लागतों में लगातार वृद्धि जारी है। लागत में इस वृद्धि के प्रभाव को आंशिक रूप से कम करने के लिए निकट भविष्य में कीमतों में उचित वृद्धि से बचा नहीं जा सकता।'' टाटा मोटर्स घरेलू बाजार में पंच, नेक्सॉन और हैरियर जैसे वाहनों की बिक्री करती है। इस बीच होंडा कार्स इंडिया ने भी कहा है कि वह निकट भविष्य में कीमतों में वृद्धि पर विचार कर रही है। कंपनी के एक प्रवक्ता ने कहा, ''जिंसों की कीमतों में वृद्धि के कारण उत्पादन लागत पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। हम अभी इस बात का अध्ययन कर रहे हैं कि इसमें से कितने भार को खुद वहन किया जा सकता है।'' सिटी और अमेज जैसे ब्रांड बेचने वाली कंपनी ने इस साल अगस्त में भी अपने वाहनों की कीमतों में बढ़ोतरी की थी। वहीं रेनो ने भी कहा है कि वह जनवरी से अपनी वाहन श्रृंखला में 'पर्याप्त' मूल्यवृद्धि पर विचार कर रही है। फ्रांसीसी कंपनी भारतीय बाजार में क्विड, ट्राइबर और काइगर जैसे मॉडल बेचती है। पिछले एक साल में इस्पात, एल्युमीनियम, तांबा, प्लास्टिक और कीमती धातुओं जैसे आवश्यक जिंसों की कीमतों में भारी वृद्धि कारण वाहन कंपनियों को दाम बढ़ाने जैसे कदम उठाने पड़ रहे हैं। इसके अलावा हाल के महीनों में परिवहन की लागत भी बढ़ी है जिससे वाहन कंपनियां प्रभावित हुई हैं।

ओमीक्रोन की चिंताओं के बीच नीतिगत ब्याज दरों को यथावत रख सकता है रिजर्व बैंक

मुंबई (एजेंसी):

कोरोना वायरस के नए स्वरूप ओमीक्रोन की चिंता के बीच भारतीय रिजर्व बैंक अपनी आगामी नीतिगत समीक्षा में ब्याज दरों के मोर्चे पर यथास्थिति बनाए रख सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति निर्धारण समिति एमपीसी की इस हफ्ते होने वाली बैठक में ब्याज दरों कोई बदलाव होने की संभावना नहीं दिख रही है। इसकी वजह ओमीक्रोन के कारण दुनियाभर के बाजारों में अचानक फैली अनिश्चतता है। ऐसी स्थिति में मौद्रिक समिति नीतिगत ब्याज दरों में बदलाव के लिए थोड़ा इंतजार करने का रुख अपनी सकती है। रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास की अगुआई वाली एमपीसी की 6-8 दिसंबर को बैठक होने वाली है जिसमें मौद्रिक स्थिति की समीक्षा की जाएगी। इसमें लिए जाने वाले फैसलों की जानकारी आठ दिसंबर को दी जाएगी। केंद्रीय बैंक ने गत अक्टूबर में भी नीतिगत दरों को यथावत रखा था। एसबीआई की एक शोध रिपोर्ट के मुताबिक, एमपीसी की बैठक में रिवर्स रेपो दर में वृद्धि का फैसला होने की चर्चा अभी अपरिपक्व है। इसके अलावा रिवर्स रेपो दर बढ़ाने जैसा गैर-परंपरागत कदम केंद्रीय बैंक सिर्फ एमपीसी में ही नहीं लेना चाहेगा। कोटक इकनॉमिक रिसर्च की एक रिपोर्ट कहती है कि कोरोना वायरस के नए स्वरूप पर फैली अनिश्चितता के बीच रिजर्व बैंक नीतिगत दरों में बदलाव का फैसला करने से पहले शायद स्थिति स्पष्ट होने का इंतजार करेगा। हालांकि, इसने फरवरी में होने वाली अगली मौद्रिक समीक्षा में रिवर्स रेपो दर में वृद्धि का अपना अनुमान बरकरार रखा है। संपत्ति सलाहकार फर्म एनारॉक ने भी कहा है कि आरबीआई रिवर्स रेपो दर में वृद्धि का फैसला मौजूदा हालात में शायद न करे। एनारॉक के चेयरमैन अनुज पुरी ने कहा, ''ऐसी स्थिति में घर खरीदारों को सस्ती दरों पर आवास ऋण मिलना कुछ और समय तक जारी रहेगा।%% अगर रिजर्व बैंक बुधवार को नीतिगत ब्याज दरें अपरिवर्तित रखता है तो यह लगातार नौवां मौका होगा जब दरों में कोई बदलाव नहीं होगा। रिजर्व बैंक ने आखिरी बार दरों में बदलाव 22 मई, 2020 को किया था। केंद्र सरकार ने रिजर्व बैंक से यह सुनिश्चित करने को कहा है कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित खुदरा महंगाई दर चार प्रतिशत पर बनी रहे जिसमें दो प्रतिशत उतार-चढ़ाव की गुंजाइश है। केंद्रीय बैंक ने गत अगस्त में मुद्रास्फीति संबंधी चिंताओं से प्रमुख ब्याज दरों को अपरिवर्तित रखा था।

वॉशिंग मशीन बाजार में अपना दबदबा बढ़ाएगी एलजी

नयी दिल्ली, घरेलू उपकरण और उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी एलजी वॉशिंग मशीन बाजार में अपनी हिस्सेदारी मजबूत करेगी। कंपनी के शीर्ष अधिकारी ने रविवार को बताया कि इस श्रेणी में प्रीमियम और बड़ी क्षमता वाली वॉशिंग मशीन की ओर ग्राहकों के रुझान को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा वॉशिंग मशीन बाजार में नए खिलाड़ी भी उतर रहे हैं। एलजी के उत्पाद समूह प्रमुख (वॉशिंग मशीन) अशोक मसनम ने पीटीआई-भाषा से कहा, ''आने वाले वर्षों में एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया बड़ी क्षमता वाली वॉशिंग मशीनों की एक नई श्रृंखला पर ध्यान केंद्रित करेगी।'' उन्होंने कहा कि भारत में वॉशिंग मशीन का बाजार लगभग 15,000-16,000 करोड़ रुपये का है और 36.8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ एलजी इस श्रेणी में प्रमुख कंपनी है। उन्होंने कहा, ''हम वॉशिंग मशीन में अपनी बाजार हिस्सेदारी को मजबूत करना चाहते हैं। हमने बाजार में बदलाव देखा है, एलजी के पास सब-डीलरों और वितरण का एक मजबूत नेटवर्क है। हमारे पास अपनी बाजार स्थिति को मजबूत करने की पर्याप्त गुंजाइश है।' उन्होंने कहा कि उपकरण खंड में वॉशिंग मशीन उच्च वृद्धि वाली श्रेणी रहेगी।

अब तक 3 करोड़ से अधिक टैक्सपेयर्स ने फाइल किया IT रिटर्न: वित्त मंत्रालय

नई दिल्ली (एजेंसी):

वित्त मंत्रालय ने रविवार को कहा कि वित्त वर्ष 2020-21 के लिए अब तक तीन करोड़ से अधिक आयकर रिटर्न (आईटीआर) दाखिल किए जा चुके हैं। मंत्रालय ने अभी तक आईटीआर दाखिल नहीं करने वाले करदाताओं से अपना रिटर्न जल्द से जल्द दाखिल करने को भी कहा है। एक आधिकारिक बयान में कहा गया कि प्रतिदिन दाखिल किए जाने वाले आयकर रिटर्न की संख्या चार लाख से अधिक हो गई है और 31 दिसंबर की विस्तारित तारीख नजदीक आने के साथ इसमें और तेजी आ रही है। विभाग ई-मेल एवं एसएमएस भेजने के अलावा मीडिया अभियानों के माध्यम से करदाताओं को अपना आयकर रिटर्न समय पर दाखिल करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। विभाग ने अभी तक आकलन वर्ष 2021-22 के लिए आयकर रिटर्न दाखिल नहीं करने वाले करदाताओं से अनुरोध किया है कि वे अंतिम समय की भीड़ से बचने के लिए जल्द से जल्द अपना आईटीआर दाखिल करें। वित्त मंत्रालय ने कहा, ''आयकर विभाग सभी करदाताओं से आग्रह करता है कि वे अपने फॉर्म 26 एएस और वार्षिक सूचना ब्योरे (एआईएस) को ई-रिटर्न दाखिल करने के पोर्टल के जरिये देखें, जिससे उन्हें पता चल सकेगा कि स्रोत पर कर कटौती (टीडीएस) और कर भुगतान सही है या नहीं।'' बयान के मुताबिक, आकलन वर्ष 2021-22 के लिए दाखिल रिटर्न का आंकड़ा 3.03 करोड़ पर पहुंच गया है। इसमें 58.98 प्रतिशत आईटीआर 1 (1.78 करोड़), आठ प्रतिशत आईटीआर 2 (24.42 लाख), 8.7 प्रतिशत आईटीआर 3 (26.58 लाख) हैं।) और 23.12 प्रतिशत आईटीआर 4 (70.07 लाख) हैं। इसके अलावा 2.14 लाख आईटीआर 5 , 91 हजार आईटीआर 6 और 15 हजार आईटीआर 7 दाखिल किए गए हैं। बयान में कहा गया है कि आधार ओटीपी और अन्य तरीकों के जरिए ई-सत्यापन की प्रक्रिया आईटीआर की जांच और रिफंड की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

सेमीकंडक्टर की कमी की वजह से वेटिंग पीरियड बढ़ने से कारों की मांग पर नकारात्मक असर: मारुति

नई दिल्ली (एजेंसी):

देश की प्रमुख कार कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) का मानना है कि सेमीकंडक्टर की कमी की वजह से 'प्रतीक्षा अवधि' (वेटिंग पीरियड) बढ़ने के चलते देश में कारों की मांग पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। हालांकि, इसके साथ ही कंपनी ने कहा है कि पिछले कुछ माह के दौरान चिप की आपूर्ति धीरे-धीरे सुधर रही है। कंपनी के पास वर्तमान में लगभग 2.5 लाख इकाइयों का लंबित ऑर्डर है। वहीं बाजार में मांग भी लगातार मजबूत बनी हुई है। नवंबर में कंपनी का उत्पादन सामान्य का 80 प्रतिशत से अधिक रहा है। मारुति सुजुकी के वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक (विपणन और बिक्री) शशांक श्रीवास्तव ने कहा, ''बुकिंग से पता चलता है कि मांग काफी मजबूत है। पूछताछ और बुकिंग दोनों में सुधार है लेकिन अब उपलब्धता एक मुद्दा है और प्रतीक्षा अवधि बढ़ गई है।'' उन्होंने आगे कहा, ''इसलिए हमें आशंका है कि लंबी प्रतीक्षा अवधि की वजह से मांग का रुख प्रभावित हो सकता है, इसका नकारात्मक असर पड़ सकता है।'' वर्तमान में घरेलू यात्री वाहन बाजार में मॉडल और संस्करणों के आधार पर प्रतीक्षा अवधि हफ्तों से लेकर महीनों तक हो सकती है।'' श्रीवास्तव ने हालांकि कहा कि मारुति की बुकिंग रद्द नहीं हो रही हैं क्योंकि कंपनी अपने ग्राहकों के साथ लगातार संवाद कर रही है।उन्होंने कहा, ''लगभग प्रत्येक ग्राहक से हर हफ्ते संपर्क किया जा रहा है और उन्हें स्थिति से अवगत कराया जा रहा है। मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है, वे प्रतीक्षा अवधि के कारण बुकिंग रद्द नहीं कर रहे हैं। '' इसके अलावा कंपनी इस स्थिति से निपटने के लिए उत्पादन को बढ़ाने का हरसंभव प्रयास कर रही है। श्रीवास्तव ने कहा कि सेमीकंडक्टर की कमी के कारण आपूर्ति में आई गिरावट में अब सुधार हुआ है। उन्होंने कहा, ''यदि आप इलेक्ट्रॉनिक कलपुर्जों की उपलब्धता को देखें, तो यह अगस्त और उसके बाद से उत्पादन को प्रभावित कर रहा है। स्थिति थोड़ी बेहतर हो रही है-सितंबर में कंपनी का उत्पादन 40 प्रतिशत था। यह अक्टूबर में 60 प्रतिशत था, नवंबर में यह लगभग 83-84 प्रतिशत था।

एलआईसी ने आईपीओ से पहले एनपीए के मोर्चे पर अपनी स्थिति में किया सुधार

नयी दिल्ली

सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी जीवन बीमा निगम (एलआईसी) ने अपने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के पहले अपनी परिसंपत्ति की गुणवत्ता में खासा सुधार किया है। एलआईसी की नवीनतम वार्षिक रिपोर्ट के मुताबिक 31 मार्च, 2021 तक उसकी गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां (एनपीए) 35,129.89 करोड़ रुपये थीं, जबकि उसका कुल पोर्टफोलियो 4,51,303.30 करोड़ रुपये का था। एलआईसी ने बताया कि भारतीय बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण (इरडा) के दिशानिर्देशों के अनुरूप उसने एनपीए के लिए 34,934.97 करोड़ रुपये के वित्तीय प्रावधान भी किए हुए हैं। देश की सबसे बड़ी बीमा कंपनी एलआईसी का 31 मार्च, 2021 को समाप्त वित्त वर्ष में सकल एनपीए का अनुपात 7.78 प्रतिशत है जबकि उसका शुद्ध एनपीए 0.05 प्रतिशत रहा। एक साल पहले उसके ऋण पोर्टफोलियो के प्रतिशत के तौर पर सकल एनपीए 8.17 प्रतिशत, जबकि शुद्ध एनपीए 0.79 प्रतिशत रहा था। वास्तविक संदर्भ में एलआईसी का वर्ष 2019-20 में एनपीए 36,694.20 करोड़ रुपये था और उसका कुल कर्ज 4,49,364.87 करोड़ रुपये था। बीमा कंपनियों के लिए ऋण दबाव की सीमा बैंकों से अलग होती है। एलआईसी अमूमन अपने सभी एनपीए के लिए पूरा प्रावधान करती रही है। एलआईसी की वार्षिक रिपोर्ट कहती है, ''प्रबंधन ने परिसंपत्ति गुणवत्ता और रियल एस्टेट, कर्ज एवं निवेश के मोर्चे पर प्रदर्शन की समीक्षा की है। जहां भी जरूरी लगा है वहां पर वित्तीय प्रावधान भी किए गए हैं।'' एलआईसी अगले कुछ महीनों में अपना आईपीओ लाने की तैयारी में है। सार्वजनिक बीमा कंपनी को बाजार में सूचीबद्धता के लिए जरूरी कानूनी संशोधन भी सरकार कर चुकी है। इस संशोधन के मुताबिक, सरकार एलआईसी में 75 प्रतिशत हिस्सेदारी अगले पांच वर्षों तक अपने पास रखेगी और उसके बाद उसे घटाकर न्यूनतम 51 प्रतिशत पर लाएगी। संशोधित कानून के मुताबिक, एलआईसी की अधिकृत शेयर पूंजी 25,000 करोड़ रुपये होगी जिसे 10 रुपये मूल्य के 2,500 करोड़ शेयरों के रूप में बांटा जाएगा। आईपीओ में दस फीसदी शेयर मौजूदा बीमाधारकों के लिए आरक्षित होंगे। आईपीओ आने और बाजार में सूचीबद्ध हो जाने के बाद एलआईसी का बाजार मूल्यांकन करीब 8-10 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान है।

अब 'ब्रांडेड' डेवलपर्स से घर खरीदना पसंद कर रहे हैं उपभोक्ता: अभिषेक लोढ़ा

नई दिल्ली (एजेंसी):

रियल एस्टेट फर्म मैक्रोटेक डेवलपर्स के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) अभिषेक लोढ़ा का मानना है कि भारतीय रियल एस्टेट का ढांचा सार्थक रूप से सुधर रहा है और अब उपभोक्ताओं का झुकाव नामी (ब्रांडेड) डेवलपर्स की तरफ बढ़ा है। लोढ़ा ने कहा कि पिछले पांच वर्षों में भारतीय रियल एस्टेट का ढांचा काफी सुधरा है। उन्होंने इसका श्रेय आवासीय इकाइयों की अनुशासित आपूर्ति और ब्रांडेड डेवलपरों की तरफ ग्राहकों के बढ़े रुझान को दिया है। पहले लोढ़ा डेवलपर्स के नाम से जानी जाने वाली फर्म मैक्रोटेक डेवलपर्स के प्रमुख ने कहा कि अब उपभोक्ता छोटे डेवलपर के बजाय ब्रांडेड डेवलपर से कहीं ज्यादा बड़े और बेहतर घरों की खरीद करना पसंद कर रहे हैं। इसमें पिछले कुछ वर्षों से संपत्ति की कीमतों में काफी हद तक बनी स्थिरता का भी योगदान है। हालांकि, लोढ़ा का मानना है कि आने वाले समय में संपत्ति या घरों की कीमतें बढ़ेगी लिहाजा पहले घर ले चुके मध्यवर्ग के खरीदारों के संपत्ति सृजन में इजाफा होगा। लोढ़ा ने कहा, ''भारत समेत दुनियाभर में भारतीय रियल एस्टेट क्षेत्र को लेकर काफी सकारात्मकता है। इसकी वजह यह है कि इस उद्योग की संरचना बेहद सार्थक ढंग से बदल रही है। अब मांग का बड़ा हिस्सा अग्रणी ब्रांडेड डेवलपर के पास जा रहा है, क्योंकि मांग कम रहने और परियोजनाओं के अटकने के दौर में भी इन डेवलपर का रवैया ग्राहकों के प्रति अच्छा रहा था।'' उन्होंने कहा, ''बड़ी रियल एस्टेट कंपनियों ने समय पर परियोजनाओं को पूरा कर ग्राहकों के बीच विश्वास का भाव पैदा किया है और अब लोग निर्माणाधीन परियोजनाओं में तभी निवेश करना पसंद कर रहे हैं जब उसके साथ कोई ब्रांडेड डेवलपर जुड़ा है।'' बाजार में मांग के बारे में पूछे जाने पर लोढ़ा ने कहा कि महामारी की दूसरी लहर के बाद से यह लगातार मजबूत बनी हुई है। उन्होंने कहा कि आपूर्ति अब ज्यादा अनुशासित हो गई है और आगे भी ऐसी बनी रहेगी।

13 दिसंबर को एनसीए निदेशक का पद संभालेंगे लक्ष्मण

मुम्बई । पूर्व क्रिकेटर वीवीएस लक्ष्मण 13 दिसंबर को राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) निदेशक का पद संभालेंगे। वह अंडर-19 विश्व कप के लिए भारतीय टीम के साथ वेस्टइंडीज दौरे पर भी जाएंगे। इससे पहले बीसीसीआई ने लक्ष्मण के साथ ही ट्रॉय कूली की गेंदबाजी कोच के रूप में नियुक्ति को भी अपनी सहमति दे दी है। बीसीसीआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, 'लक्ष्मण के अनुबंध पर पहले ही हस्ताक्षर किए जा चुके हैं। वह 13 दिसंबर को बेंगलुरू में एनसीए से जुड़ेंगे। लक्ष्मण इसके साथ ही अंडर-19 आईसीसी विश्व कप के लिए वेस्टइंडीज भी जाएंगे।' बीसीसीआई अधिकारी ने यह भी कहा है कि कि ऋषिकेश कानिटकर या सीतांशु कोटक में से कोई एक अंडर-19 प्रतियोगिता में मुख्य कोच की भूमिका निभाएगा।

दूसरे टेस्ट में टीम इंडिया जीत से पांच विकेट दूर

540 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए न्यूजीलैंड ने 140 रनों पर गंवाये पांच विकेट

मुम्बई ।

भारतीय टीम ने दूसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में मेहमान टीम न्यूजीलैंड पर शिकंजा कस दिया है। भारतीय टीम को इस मैच में अब जीत के लिए पांच विकेट और चाहिये। तीसरे दिन का खेल समाप्त होने के समय तक न्यूजीलैंड ने जीत के लिए मिले 540 रनों के विशाल लक्ष्य का पीछा करते हुए अपनी दूसरी पारी में पांच विकेट पर केवल 140 रन बनाए थे, इस प्रकार वह अभी भी 400 रन पीछे है। वहीं अभी दो दिनों का खेल बाकि है, ऐसे में भारतीय टीम की जीत तय है। तीसरे दिन स्टंप के समय कीवी बल्लेबाज हेनरी निकोल्स 36 और रचिन रविंद्र दो रन पर खेल रहे थे। वहीं भारत की तरफ से आर अश्विन ने 27 रन देकर तीन जबकि अक्षर पटेल ने 42 रन देकर एक विकेट लिया है। अश्विन ने कीवी टीम के कप्तान टॉम लैथम को केवल 6 रनों पर ही पेवेलियन भेज दिया।। इससे पहले सुबह तीसरे दिन सुबह भारतीय टीम ने अपनी दूसरी पारी में 69 रनों से आगे खेलते हुए 7 विकेट के नुकसान पर 276 रन बनाकर पारी घोषित कर दी। पहली पहली पारी के आधार पर भारतीय टीम को 263 रनों की बढ़त मिली थी। इस प्रकार भारतीय टीम की कुल बढ़त बढ़कर 539 रन हो गयी। इस प्रकार न्यूजीलैंड को जीत के लिए 540 रनों का कठिन लक्ष्य मिला। इस मैच में भारतीय टीम ने अपनी पहली पारी में 325 रन बनाए थे जबकि न्यूजीलैंड टीम 62 रनों पर ही आउट हो गयी थी। पहली पारी में एजाज ने सभी दस विकेट लिए थे जबकि भारत की ओर से आर अश्विन ने सबसे ज्यादा 4 जबकि मोहम्मद सिराज ने 3, अक्षर पटेल ने 2 और जयंत यादव ने एक विकेट लिया था।

न्यूजीलैंड की दूसरी पारी की शुरूआत भी खराब रही और टीम ने 13 रन पर टॉम लाथम का विकेट गंवा लिया। लाथम 6 रन बनाकर अश्विन की गेंद पर एलबीडब्ल्यूआउट हुए। टॉम ब्लंडेल ने 6 गेंदें खेली पर वह एक भी रन नहीं बना सके और शून्य पर ही आउट हो गये । न्यूजीलैंड का चौथा विकेट डेरिल मिशेल का गिरा। वह अक्षर पटेल की गेंद पर जयंत यादव के हाथों कैच आउट करवाया। मिशेल ने 92 गेंदों पर 7 चौकों और 2 छक्कों की मदद से 60 रन बनाए।

वहीं तीसरा विकेट अश्विन को मिला। अश्विन ने टेलर को पुजारा के हाथों कैच आउट करवाया। टेलर केवल 6 रन बनाकर वापस लौटे। विग यंग 41 गेंदों पर 20 रन बनाकर पेविलनय लौटे। अश्विन की गेंद पर वह सूर्यकुमार यादव के हाथों कैच आउट हुए। वहीं इससे पहले सुबह भारतीय टीम ने बिना किसी नुकसान के 69 रनों से आगे खेलते हुए चेतेश्वर पुजारा 47 और मयंक अग्रवाल 62 रनों के विकेट खो दिये। पुजारा को दूसरी पारी में भी एजाज पटेल ने ही अपना शिकार बनाया। इसके अलावा मयंक को भी एजाज की गेंद पर विल यंग ने कैच किया। मयंक ने पहली पारी में शतक लगाया था। वहीं अब दूसरी पारी में अर्धशतक लगाया है।

सिंधू बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर के फाइनल में हारीं रजत पदक से करना पड़ेगा संतोष

बाली ।

भारतीय महिला बैडमिंटन स्टार पीवी सिंधू रविवार को यहां खेले गये बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर के फाइनल में हार गयीं। इसी के साथ सिंधू को रजत पदक ही मिल पाया है। सिंधू को खिताबी मुकाबले में दक्षिण कोरिया की आन सियोंग ने सीधे गेम में 16-21, 12-21 से हराया। इस मुकाबले में कोरियाई खिलाड़ी सियोंग ने शानदार प्रदर्शन करते हुए सिंधू को कोई अवसर नहीं दिया। कोरियाई खिलाड़ी ने नेट पर शानदार खेल दिखाया और बेसलाइन पर भी अच्छा प्रदर्शन किया। उसने इस मैच में सिंधू को वापसी का काई अवसर नहीं दिया। इस खिलाड़ी ने इससे पहले अक्टूबर में डेनमार्क ओपन के क्वार्टर फाइनल में भी सिंधू को पराजित किया था। इससे पहले टोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता सिंधू ने जापान की अकाने यामागुची को एक रोमांचक सेमीफाइनल मुकाबले में 21-15, 15-21, 21-19 से हराकर तीसरी बार इस टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनायी थी।। उन्होंने 2018 में भी यह खिताब जीता था और इस प्रकार यह उपलब्धि अपने नाम करने वाली वह एकमात्र भारतीय खिलाड़ी हैं। सिंधू ने इस साल फ्रेंच ओपन, इंडोनेशिया मास्टर्स और इंडोनेशिया ओपन में भी सेमीफाइनल तक का सफर तय किया था।

रुबलेव और मेदवेदेव की जीत से रूस डेविस कप फाइनल में पहुंचा

मैड्रिड । दानिल मेदवेदेव और आंद्रे रुबलेव की जीत से रूस ने डेविस कप टेनिस प्रतियोगिता के सेमीफाइनल में जर्मनी को आसानी से हराकर फाइनल में जगह पक्की की जहां उसका सामना कोएशिया से होगा। विश्व रैंकिंग में दूसरे स्थान पर काबिज मेदवेदेव ने जेन-लेनार्ड स्ट्रफ पर 6-4, 6-4 की जीत दर्ज की। इससे पहले रुबलेव ने डोमिनिक कोएफर पर 6-4, 6-0 की आसान जीत से अपने देश को शानदार शुरुआत दिलाई थी। इससे पहले क्रोएशिया ने सर्बिया को हराकर शुक्रवार को फाइनल में जगह पक्की की। दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी नोवाक जोकोविच एकल की अपनी जीत को निर्णायक युगल मैच में दोहरा नहीं सके। क्रोएशिया के निकोला मेकटिच और मेट पेविच ने युगल मुकाबले में जोकोविच और फिलिप क्राजिनोविच को 7-5, 6-1 से हराया। इससे पहले जोकोविच ने एकल मैच में मारिन सिलिच को 6-4, 6-2 से हराकर क्रोएशिया को बराबरी दिलाई थी। क्रोएशिया को बोर्ना गोजो ने बढत दिलाई थी जिन्होंने पहले एकल मैच में दुसान लाजोविच को 4-6, 6-3, 6-2 से हराया रूस और क्रोएशिया दोनों तीसरी बार इस खिताब को जीतने के लिए भिड़ेंगे।

एकतरफा मुकाबले में भारतीय महिला हॉकी टीम ने थाईलैंड को 13-0 से हराया

डोंगहे ।

डोंगाई महिला एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में दक्षिण कोरिया में भारतीय महिला हॉकी टीम ने थाईलैंड को 13-0 से हरा दिया। भारतीय महिला हॉकी टीम की खिलाड़ी डैगफ्लिकर गुरजीत कौर ने मैच की शुरुआत में पांच गोल दागे। टोक्यो ओलंपिक खेलों में चार गोल करने वाली गुरजीत कौर ने खेल के दूसरे मिनट में गोल करके भारत को 1-0 की बढ़त दिला दी।

शुरुआती गोल ने थाईलैंड को बैकफुट पर ला दिया और ओलंपिक में हैट्रिक बनाने वाली एकमात्र भारतीय महिला खिलाड़ी वंदना कटारिया ने पांच मिनट बाद दूसरा गोल किया। पहला क्वार्टर खत्म होने तक लिलिमा मिंज ने 14वें मिनट में एक और फील्ड गोल जोड़ा, जबकि गुरजीत कौर और ज्योति ने 14वें और 15वें मिनट में पेनल्टी कार्नर से दो और गोल कर भारत को 5-0 की बढ़त दिला दी।

दूसरे क्वार्टर के पहले मिनट में रविवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में डेब्यू करने वाली राजविंदर कौर ने 16वें मिनट में एक फील्ड गोल किया और 24वें मिनट में गुरजीत ने अपना तीसरा गोल किया और 24वें मिनट लिलिमा ने एक पीसी से एक और गोल किया। भारतीय टीम ने 25वें मिनट में गुरजीत के हाथों एक और पीसी पर निशाना साधते हुए एक और गोल किया, जिससे दूसरे क्वार्टर के अंत में भारत को 9-0 की बढ़त मिल गई। 10 मिनट के हाफ-टाइम ब्रेक से वापसी करते हुए, भारत ने खेल जारी रखा। लेकिन थाईलैंड ने तीसरे क्वार्टर में पहले छह मिनट के लिए अपना अच्छा बचाव किया। लेकिन ज्योति ने 36वें मिनट में एक और फील्ड गोल दागते हुए भारत की बढ़त को 10 गोल से आगे कर दिया। 55वें मिनट में मोनिका ने गेंद को नेट्स में डालकर भारत को गोल से एक और बढ़त दिलाई। तीन मिनट बाद, गुरजीत कौर ने देर से पेनल्टी कार्नर से अपना पांचवां गोल किया, जिससे भारत के अंक में एक और गोल जुड़ा जिससे भारत ने 13-0 से मैच जीत लिया।

टोक्यो ओलंपिक में चौथे स्थान पर रहने के बाद यह भारत की टीम का पहला मैच था। कप्तान रानी रामपाल की अनुपस्थिति में भारत का नेतृत्व अनुभवी गोलकीपर सविता ने किया। एशियाई हॉकी फेडरेशन ने कहा कि भारत का मलेशिया के खिलाफ छह दिसंबर को होने वाला मैच नहीं होगा। भारत का अगला मुकाबला 8 दिसंबर को मेजबान कोरिया से होगा।

संक्षिप्त समाचार

पूर्व चैम्पियन चेन्नई सिटी एफसी के आई-लीग में भाग लेने पर रोक

नई दिल्ली। पूर्व चैम्पियन चेन्नई सिटी एफसी अब आई-लीग फुटबॉल मुकाबलों में भाग नहीं ले पायेगी। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने क्लब लाइसेंस नियमों का पालन नहीं करने के कारण चेन्नई सिटी के आई-लीग प्रतियोगिता में भाग लेने पर प्रतिबंध लगा दिया है। क्लब पर रोक लगाने का फैसला एआईएफएफ की क्लब लाइसेंस समिति ने लिया। एआईएफएफ से अपने एक बयान में कहा, एआईएफएफ क्लब लाइसेंस समिति ने लाइसेंस नियमों का पालन करने में नाकाम रहने के कारण चेन्नई सिटी एफसी (क्लब) के आगामी हीरो आई-लीग 2021-22 में भाग लेने पर रोक लगा दी है। वहीं क्लब ने कहा था कि वह नियमों का पालन करेगा और इसके लिए उसे अतिरिक्त समय भी दिया गया था पर इसके बाद भी क्लब अपने वादे को नहीं निभा पाया। आई-लीग क्वालीफायर में दूसरे स्थान पर रहने वाले केंकरे एफसी अब पूर्व चैंपियन की जगह आई-लीग में भाग लेगा। आईलीग 26 दिसंबर से कोलकाता में शुरू होगी हालांकि इसके मैचों की घोषणा होना अभी बाकी है। एआईएफएफ ने आई-लीग में भाग लेने से प्रतिबंधित करने के साथ ही क्लब पर फीफा ट्रांसफर प्रतिबंध भी लगाया है। इससे वह किसी खिलाड़ी के साथ करार भी नहीं कर पायेगा।

शुभमन के पास अच्छी बल्लेबाजी की तकनीक : सचिन

मुंबई। महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने युवा बल्लेबाज शुभमन गिल की सराहना करते हुए कहा है कि वह किसी भी क्रम पर बल्लेबाजी कर सकते हैं पर इसके लिए उन्हें अच्छी शुरूआत को बड़ी पारियों में बदलना होगा। सचिन के अनुसार शुभमन के पास अच्छी बल्लेबाजी करने की तकनीक है। इसके साथ ही उसको कठोर और उछाल भरी पिचों पर खेलने का भी अच्छा अनुभव है। तकनीक को लेकर कोई मसला नहीं है। उसने अच्छी शुरूआत की है पर अब उसे बड़ी पारियों में बदलने का समय आ गया है। तेंदुलकर ने कहा कि इस युवा बल्लेबाज को शतक को लेकर बहुत दबाव नहीं लेना चाहिये क्योंकि उसके अंदर रनों की भूख है। उन्होंने कहा, 'टीम में आने के बाद यह बड़े स्कोर बनाने की भूख की बात होती है जो उसके अंदर है। उसे बस अच्छी शुरूआत को बड़ी पारियों में बदलना है और इसके लिये एकाग्रता नहीं खोनी चाहिये। कानपुर और मुंबई दोनों टेस्ट में वह अच्छी गेंद पर आउट हुआ। वह सीखने की प्रक्रिया में है और सीख रहा है।' सचिन ने इसके साथ ही पदार्पण टेस्ट में शतक जमाने वाले श्रेयस की भी तारीफ करते हुए कहा, 'उसने अवसर का पूरा फायदा उठाया।

एशेज सीरीज के पहले टेस्ट के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम घोषित, ट्रेविस हेड शामिल

सिडनी ।

ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड के साथ होने वाली एशेज क्रिकेट सीरीज के पहले टेस्ट मैच के लिए अपनी टीम घोषित कर दी है। 8 दिसंबर से गाबा मैदान पर होने वाले दिन-रात्रि के पहले टेस्ट के लिए ट्रेविस हेड को अंतिम ग्यारह खिलाड़ियों में शामिल किया गया है जबकि मार्कस हैरिस सलामी बल्लेबाज के तौर पर उतरेंगे। पैट कमिंस टीम के कप्तान रहेंगे। तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क , जोश हेजलवुड और ऑलराउंडर कैमरन ग्रीन को भी अंतिम ग्यारह में शामिल किया गया है। टीम में एकमात्र स्पिनर के तौर पर नाथन लायन को रखा गया है। मार्नस लाबुशेन तीसरे और अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ चौथे नंबर पर उतरेंगे। 5वें नंबर पर ट्रेविस हेड को बल्लेबाजी का अवसर मिलेगा। विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी एलेक्स कैरी के पास रहेगी। उन्हें पूर्व कप्तान टिम पैन की जगह शामिल किया गया है। पैन ने हाल ही में कप्तानी छोड़ने के बाद खेल से ब्रेक ले लिया था।बाएं हाथ के बल्लेबाज कैरी ने साल 2018 में वनडे और टी20 डेब्यू किया था। इस खिलाड़ी ने अब तक 45 वनडे और 38 टी20 मैच खेले हैं। इस प्रकार कुल 83 अंतरराष्ट्रीय मैच के बाद उन्हें टेस्ट डेब्यू का मौका मिलने जा रहा है। कैरी ऑस्ट्रेलिया की तरफ से टेस्ट डेब्यू करने वाले 461वें खिलाड़ी होंगे।

और जोश हेजलवुड।

ऑस्ट्रेलिया (अंतिम ग्यारह):

पैट कमिंस (कप्तान), डेविड वॉर्नर, मार्कस हैरिस, मार्नस लाबुशेन, स्टीव स्मिथ कप्तान (उप कप्तान), ट्रेविस हेड, कैमरन ग्रीन, एलेक्स कैरी (विकेटकीपर),मिचेल स्टार्क, नाथन लायन

एशेज सीरीज का कार्यक्रम

- **पहला टेस्ट:** 8-12 दिसंबर, गाबा
- **दूसरा टेस्ट**-16 से 20 दिसंबर, एडिलेड ओवल
- **तीसरा टेस्ट**- 26 से 30 दिसंबर, मेलबर्न
- **चौथा टेस्ट**-5 से 9 जनवरी, सिडनी
- **पांचवां टेस्ट**-14 से 18 जनवरी, पर्थ ।

स्पेनिश फुटबॉल लीग ला लिगा में रियाल मैड्रिड ने सोसिडाड को हराया

ईपीएल में मैनचेस्टर सिटी आगे निकला

बार्सिलोना ।

विनिसियस जूनियर और लुका जोविच के गोल से रियाल मैड्रिड ने स्पेनिश फुटबॉल लीग ला लिगा में रियाल सोसिडाड को 2-0 से हरा दिया। इस जीत के साथ ही अंकतालिका में उसकी स्थिति बेहतर हो गयी है। विनिसियस और जोविच ने दूसरे हाफ की शुरुआत में ही गोल दागकर रियाल को लगातार आठवीं जीत दिलायी। इससे वह अपने करीबी प्रतिद्वंद्वी सेविला क्लब से से आठ अंक आगे निकल गया है। वहीं एटलेटिको मैड्रिड और बार्सिलोना अपने-अपने मुकाबलों में हार गयी। एटलेटिको को मालोर्का ने 2-1 से हराया। इस हार के साथ ही वह रियाल मैड्रिड से 10 अंक पीछे हो गयी है जबकि बार्सिलोनातो अपने परंपरागत प्रतिद्वंद्वी मैड्रिड से 16 अंक पीछे है। उसे रियाल बेटिस ने 1-0 से हराया। बेटिस की टीम इस जीत से तीसरे स्थान पर पहुंच गयी है। वहीं सेविला ने एक अन्य मैच में विल्लारियाल को 1-0 से हराया. मैनचेस्टर सिटी ने वाटफोर्ड को 3-1 से हराया जबकि चेल्सी को वेस्ट हैम के हाथों 3-2 से हार का सामना करना पड़ा। इससे सिटी इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) फुटबॉल प्रतियोगिता में शीर्ष पर पहुंच गयी है। इससे पहले चेल्सी नंबर एक पर थी पर अब सिटी 15 मैचों में 35 अंक लेकर पहले स्थान पर पहुंच गयी है। चेल्सी के 15 मैचों में 33 अंक हैं और वह लिवरपूल (15 मैचों में 34 अंक) के बाद तीसरे स्थान पर खिसक गयी है। डिवोक ओरिगी के गोल से लिवरपूल ने इंजुरी टाइम में किये गये गोल से वॉल्व्स को 1-0 से हराया।

आईएसएल पदक तालिका में शीर्ष पर पहुंची मुंबई सिटी

बामबोलिम । मुंबई सिटी एफसी इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) फुटबॉल में बेंगलुरू एफसी को 3-1 से हराकर पदक तालिका में शीर्ष पर पहुंच गयी है। मुम्बई की ओर से इगोर एंगुलो ने 9वें मिनट में पेनल्टी को गोल में बदलकर पहला गोल किया। वहीं बेंगलुरू टीम की ओर से क्लीटन सिल्वा ने 20वें मिनट में फ्री किक पर एकमात्र गोल किया। दोनों टीमें मध्यांतर तक 1-1 से बराबरी पर थीं पर दूसरे हाफ में मुंबई ने दो गोल दाग दिये। मुम्बई की ओर से दूसरा गोल मोर्तादा फाल ने 54वें मिनट में हेडर से किया। वहीं इसके बाद यगोर कताऊ ने 85वें मिनट में तीसरा गोल कर अपनी टीम की जीत पक्की कर दी। मुंबई की चार मैचों में यह तीसरी जीत है जिससे अब उसके 9 अंक हो गए हैं। इससे वह तालिका में शीर्ष पर पहुंच गयी है। वहीं बेंगलुरू की टीम को दूसरी बार हार मिली है। उसके 4 मैचों में 4 ही अंक हैं। मुंबई सिटी के मुख्य कोच डेस बकिंगम ने अपनी टीम के इस शानदार प्रदर्शन पर खुशी व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि हैदराबाद से मिली हार के बाद टीम ने शानदार वापसी की है। उन्होंने मैच के बाद कहा, 'मुझे इस टीम पर गर्व है जो अलग-अलग अंदाज में खेल रही है और शानदार तरीके से जीत हासिल कर रही है।'

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान चैपल ने कहा, कप्तान के रूप में कमिंस सही विकल्प

ब्रिस्बेन।

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान इयान चैपल ने रविवार को कहा कि नए टेस्ट कप्तान के तौर पर तेज गेंदबाज पैट कमिंस सही विकल्प हैं। साथ ही, उन्होंने सवाल किया कि केपटाउन में 2018 के एक विवाद के बाद क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) द्वारा स्टीवन स्मिथ और डेविड वार्नर को दी गई सजा में इतना फर्क क्यों हैं। विकेटकीपर-बल्लेबाज टिम पेन के कप्तान पद से हटने के बाद कमिंस को टेस्ट क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया का कप्तान नियुक्त किया गया है। चैपल ने रविवार को ईएसपीएन क्रिकइन्फो के लिए अपने कॉलम में लिखा, कप्तान के रूप में कमिंस सही विकल्प हैं। वह ऑस्ट्रेलिया में अब तक के सबसे प्रेरणादायक क्रिकेटर हैं। अगर टीम का कोई साथी कमिंस के कप्तान बनने से खुश नहीं है तो उसे अपनी सोच बदलनी चाहिए। स्मिथ को उप कप्तान का पद दिए जाने के बारे में बात करते हुए चैपल ने टिप्पणी की, हालांकि, उप-कप्तान बनाए जाने के बाद स्मिथ विवादों में चल रहे हैं क्योंकि स्मिथ और डेविड वार्नर एक ही विवाद में शामिल थे और दोनों को एक ही सजा दी गई थी, तो सजा भुगतने के लिए वार्नर ही क्यों बचे हैं। ये खिलाड़ी के साथ धोखा हैं। मैं केवल यह मान सकता हूं कि स्मिथ को मामले में कम सजा मिली, क्योंकि क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) में किसी को वार्नर पसंद नहीं था। पसंद और नापसंद किसी भी चयन का हिस्सा नहीं हो सकता है। चैपल ने कहा ऑस्ट्रेलिया के पास बल्ले से तीन स्थापित सितारे हैं- वार्नर, स्मिथ और मार्नस लाबुस्चगने। उनके पास तीन अन्य खिलाड़ी हैं जो सफल साबित हो सकते हैं, जिसमें कैमरन ग्रीन के सफल होने की सबसे अधिक संभावना है। यदि एलेक्स कैरी कीपर के रूप में अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो ऑस्ट्रेलिया की सबसे अच्छी विशेषता यह है कि वह इस समय गेंदबाजी के क्रम में अधिक मजबूत हैं। चैपल ने कहा कि अभी विजेता की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है क्योंकि यह सबसे कठिन एशेज सीरीज हो सकती है।

स्कूल में नीरज चोपड़ा के स्टाइल से प्रभावित हुए पीएम मोदी

-नीरज ने अहमदाबाद के स्कूल में पहुंचकर युवाओं का बढ़ाया था हौसला

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक स्कूल में युवा विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा की रविवार को सराहना की। पीएम ने कहा कि इस तरह के प्रयासों से खेल और व्यायाम के प्रति जिज्ञासा बढ़ेगी। मोदी की प्रशंसा उस वक्त आई है जब एक दिन पहले भाला फेंक खिलाड़ी चोपड़ा ने एक राष्ट्रीय मिशन शुरू करने के लिए गुजरात के अहमदाबाद शहर के एक स्कूल का दौरा किया। इस मिशन के तहत प्रसिद्ध खिलाड़ी देश के स्कूलों का दौरा करेंगे ताकि विद्यार्थियों को संतुलित आहार, तंदरुस्ती और खेल के महत्व के बारे में जागरूक किया जा सके। चोपड़ा के स्कूल दौरे और विद्यार्थियों के साथ उनकी बातचीत पर मोदी ने ट्वीट किया, 'आइए हम जोश बरकरार रखें और अपने युवाओं को खेल के मैदान पर चमकने के लिए प्रेरित करें।' मोदी ने चोपड़ा को युवा छात्रों को भाला फेंकने के लिए प्रोत्साहित करने के बारे में ट्वीट किया, 'शानदार पल।' प्रधानमंत्री ने एक अन्य ट्वीट में कहा, 'युवा छात्रों के बीच जाने और उन्हें खेल और फिटनेस के लिए प्रेरित करने के लिए नीरज चोपड़ा की यह एक बेहतरीन पहल है। इस तरह के प्रयास से खेलकूद और व्यायाम के प्रति उत्सुकता बढ़ेगी।' गुजरात सरकार की एक विज्ञप्ति में कहा गया कि चोपड़ा ने अहमदाबाद के संस्कारधाम स्कूल का दौरा किया और 75 विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों के साथ बातचीत की, जो इस पहल के तहत वहां जुटे थे। प्रधानमंत्री मोदी के दिमाग की उपज, इस पहल के तहत सभी ओलंपिक और पैरालंपिक खिलाड़ियों से दो साल में 75 स्कूलों के विद्यार्थियों के साथ बातचीत करने का विचार है ताकि युवाओं को 'संतुलित आहार' लेने और फिटनेस गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित किया जा सके।

आज पीएसआई-एलआरडी की शारीरिक टेस्ट स्थगित की घोषणा

गांधीनगर ।

गुजरात में एलआरडी भर्ती को लगा ग्रहण हट नहीं रहा है । पहले उम्मीदवारों द्वारा लड़ी गई लंबी लड़ाई के बाद अब परीक्षा की तारीख घोषित हुई, तो राज्य में बेमौसम बारिश ने एलआरडी के उम्मीदवारों को बाधा डाला है दो दिन पहले बेमौसम बारिश की वजह से राज्य के ६ ग्राउंड पर एलआरडी और पीएसआई की टेस्ट स्थगित रखी गई थी । जिसके बाद आज एक और ग्राउंड पर शारीरिक टेस्ट की परीक्षा स्थगित रखी गई है । सोमवार को सूरत में पुलिस भर्ती की शारीरिक टेस्ट स्थगित रखी गई है । राज्य में पुलिस भर्ती के लिए तैयारी कर रहे उम्मीदवार सरकारी नौकरी की अपेक्षा से पुलिस कॉन्स्टेबल की भर्ती का इंतजार कर रहे थे । तब भर्ती का विज्ञापन जारी होने पर उम्मीदवारों में खुशी का माहौल फैल गया तब राज्य में बेमौसम बारिश रूकावट बन गया है । एलआरडी भर्ती बोर्ड के चेयरमैन आईपीएस हसमुख पटेल ने जानकारी देकर ट्वीट किया कि, बेमौसम बारिश के बाद बादल छाया मौसम की वजह से मैदान दौड़ने के लिए योग्य नहीं होने पर कल ६.१२.२०२१ को एसआरपी ग्रुप वाव, सूरत में पुलिस भर्ती की शारीरिक टेस्ट स्थगित रखा गया है । राज्य में अन्य १४ जगहों पर शारीरिक टेस्ट लिया जाएगा । बेमौसम बारिश के बाद बादल छाया मौसम की वजह से मैदान दौड़ने के लिए योग्य नहीं होने पर ६.१२.२०२१ को एसआरपी ग्रुप वाव, सूरत में पुलिस भर्ती की शारीरिक टेस्ट स्थगित रखा गया है । राज्य में अन्य १४ जगहों पर शारीरिक टेस्ट लिया जाएगा । उन्होंने और एक ट्वीट में बताया कि, स्थगित रखी गई शारीरिक टेस्ट अब बाद में कब लेना इस मामले में निर्णय दोनों बोर्ड द्वारा सोमवार को लिया जाएगा । दो दिन पहले भरूच, खेडा, नडियाद, सुरेन्द्रनगर में टेस्ट स्थगित रखी गई है । अमरेली और वाव -सूरत के ग्राउन्ड में भी टेस्ट स्थगित की गई थी । जिसकी ३ और ४ दिसंबर को शारीरिक टेस्ट लेना था । स्थगित रखी गई शारीरिक टेस्ट अब बाद में कब लेना इस मामले का निर्णय दोनों बोर्ड द्वारा सोमवार को लिया जाएगा ।

बिना ब्याज के लोन लेने के चक्कर में ११ लाख गंवाया

अहमदाबाद ।

कोरोना महामारी और इसकी वजह से लागू किया गया लॉकडाउन की सीधी असर व्यापार, धंधा और नौकरी पर पड़ी है । ऐसे में जल्दी से रुपया कमा लेने के चक्कर में लोग गलत रास्ते जाकर अपने पैर ही कुल्हाड़ी मार रहे हैं । ऐसी ही एक घटना अहमदाबाद में हुई है जिसमें फर्जी आंगडिया पीढ़ी से बिना ब्याज की ३ करोड़ की लोन लेने की लालच में व्यापारी ने ११ लाख रुपया गंवाया है । इस केस में पुलिस ने पांच लोगों की गिरफ्तारी की है । मिली जानकारी के अनुसार शहर के नवरंगपुरा क्षेत्र में प्रिंटिंग का व्यवसाय करते देवांगभाई शाह को अपने धंधे के लिए पांच करोड़ रुपये की जरूरत थी । उन्होंने इस मामले में अपने दोस्तों और परिजन को परिचित व्यक्ति या पीढ़ी से लोन लेने मामले में बात की थी । ऐसे में उनकी मुलाकात चेन्नई के रामशिवा के साथ हुई थी । जिसमें रमाशिवा के संबंधित लोगों ने अहमदाबाद में देवांगभाई के साथ मुलाकात की थी । रामशिवा के साथी गौरांग पंडया ने देवांगभाई को कहा कि, उनको ८ करोड़ रुपये का डिमांड ड्राफ्ट देगा । जिसमें से ५ करोड़ रुपया वापस करना होगा और ३ करोड़ रुपया पांच वर्ष के लिए बिना ब्याज पर इस्तेमाल करने के लिए मिलेगा । इसके बाद उन्होंने ८ करोड़ का डीडी नहीं मिलने पर उन्होंने बताये अनुसार उन्होंने ५ लाख रुपया जमा नहीं कराया । लेकिन जबकि व्यवस्था हुई तब उन्होंने गौरांग पंडया ने कहेली सीजी रोड पर स्थित श्री कृपा एंटरप्राइज में जमा कराया था । इसके बाद फिर एक बार उन्होंने ६ लाख जमा कराया था । बिना ब्याज पर ५ करोड़ रुपया लेने के चक्कर में देवांगभाई ने ११ लाख रुपया दिया था । जो नकली आंगडिया पीढ़ी खड़ी की गई थी यह रुपया आ जाने के बाद बंद कर दी गई थी । इस तरह उनके पास से रुपया वसूले जाने का और कोई डीडी नहीं मिलने का जानकर खुद के साथ धोखाधड़ी हुई होने का लगा था । इसके बाद देवांगभाई ने नवरंगपुरा पुलिस स्टेशन में धोखाधड़ी की शिकायत दर्ज कराई थी ।

मोदी ने नीरज चोपड़ा की अहमदाबाद मुलाकात की प्रशंसा की

अहमदाबाद ।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को टोक्यो ओलंपिक के स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा की अहमदाबाद मुलाकात मामले में ट्वीट किया है । इस ट्वीट में पीएम मोदी ने गुजरात की एक स्कूल में भावी चैम्पियन को तालीम देने की कई महान क्षण को ट्वीट किया है । पीएम मोदी ने विद्यार्थियों के साथ समय बिताना और उनको खेलकूद और फिटनेस के लिए प्रोत्साहित करने के लिए गोल्डन बॉय नीरज चोपड़ा की प्रशंसा की है । टोक्यो ओलंपिक में गोल्ड मेडलिस्ट नीरज चोपड़ा ने शनिवार को भारत के टोप के एथलीट को स्कूल के बच्चों के साथ जुड़कर बहुत ही महत्वाकांक्षी कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया । अहमदाबाद की संस्कारधाम स्कूल में गोल्डन बॉय नीरज चोपड़ा ने ७५ स्कूल के विद्यार्थियों के साथ संवाद किया था । जिसमें नीरज ने उनको बेलेन्स्ड डायेट, फिटनेस और स्पोर्ट्स के महत्व मामले में समझाया था । अहमदाबाद की संस्कारधाम स्कूल में पहुंचे नीरज चोपड़ा ने विद्यार्थियों के साथ कई प्रकार के खेल खेले और उनको जेवलीन थ्रो की खेल मामले में कई टिप्स भी बताया । उन्होंने संतुलित आहार, स्वास्थ्य और खेलकूद के महत्व मामले में भी विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दिया । उन्होंने विद्यार्थियों के प्रश्नों के आसान उत्तर देकर उनको रोमांचित कर दिया उनकी बात कहने की बेजोड शैली ने छोटे बच्चों को मजा आ गई और नीरज छोटे बच्चों का प्रिय बन गया था । नीरज का मनपसंद भोजन कौन-सा है, ऐसे प्रश्नों का जबाव देते उपस्थित लोगों ने उनको तालियां बजाकर स्वागत किया इस उत्तर में उन्होंने किस तरीके से मसाला का उपयोग किए बिना वेजिटेबल बिरियानी बनाने का और दही के साथ खाने का उनको पसंद है इसका वर्णन किया । उन्होंने आगे बताया है कि, यह एक स्वास्थ्यप्रद भोजन है जिसमें सब्जी और कार्बोहाइड्रेट्स के योग्य मिश्रण की वजह से खनिजतत्व रहे है ।

ओमिक्रोन को लेकर सरकार सतर्क है : स्वास्थ्य मंत्री

दवाओं और ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा सरकार के पास उपलब्ध : कुल ८७९५९ बेड की व्यवस्था की गई

गांधीनगर ।

जामनगर में ओमिक्रोन का गुजरात का पहला केस मिला है । इसके साथ ही आईआईटी कानपुर के प्रोफेसर मनिंदर अग्रवाल ने भारत में कोरोना की तीसरी लहर मामले में सबसे बड़ी चेतावनी दी है । अब फिर यह महामारी का डर फैल गया है । ऐसे में गुजरात सरकार लड़ने के लिए कितनी तैयार है । स्वास्थ्य मंत्री ऋषिकेश पटेल ने बताया है कि, ओमिक्रोन को लेकर राज्य सरकार सतर्क है । ICU और वेंटिलेटर बेड की व्यवस्था की गई है । दवाओं और ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा सरकार के पास उपलब्ध है । कुल ८७९५९ बेड की व्यवस्था की गई है । राज्य में टेस्टिंग की व्यवस्था के लिए उन्होंने कहा है कि, संदिग्ध केस के मामले में प्लेन में उनके साथ आये यानी कि सीट की आगे की ३ लाइन और पीछे की ३ लाइन में बैठे यात्रियों का टेस्ट किया जाएगा । अन्य संदिग्ध केस हाईरिस्क देशों से आये हैं । लेकिन ओमिक्रोन बढ़ेगा तो उसके खिलाफ लड़ने के लिए गुजरात सरकार तैयार है । ज्यादा प्रमाण में अभी टेस्टिंग हो इसकी सूचना दी गई है । प्रत्येक कॉर्पोरेशन स्तर पर और जिला स्तर पर भी सूचनाएं दी गई है । अन्य लोगों के जैसे उनको भी नियमों का पालन कराया जाएगा । उन्होंने आगे बताया है कि हाल में राज्य में ICU विथ वेंटिलेटर के साथ ६५५१ बेड उपलब्ध है । ६२९८ ICU बेड, ४८७४४ ऑक्सीजन बेड, १९७६३ जनरल बेड की व्यवस्था की गई है । इसके साथ ही बच्चों के लिए ५९७ वेंटिलेटर, १०६१ ICU, ३२१९ ऑक्सीजन और २३४२ जनरल बेड की व्यवस्था की गई है । रेमडेसिवीर का ३३४९७३ स्टोक उपलब्ध है । एम्फोटेरिसीन बी, टोसिलिजुमेब, फेविपीरावीर टेब का पर्याप्त स्टोक है । राज्य में १२१ आरटीपीसीआर लेबोरेटरी उपलब्ध है । जिसमें

५८ सरकारी और ६३३ प्राइवेट लेबोरेटरी है । गुजरात में ९३.३ फीसदी लोगों को वैक्सीन का पहला डोज दिया गया है । अब राज्य में अभी भी ३३२६७९४ लोगों को पहला डोज देने का बाकी है । कुल ४०,३१,४५५ लोगों को दूसरा डोज देने का बाकी है ।

सूरत में दो दिन में 300 अनाथ बेटियों ने पहनी "चुंदडी महियर की"

सूरत भूमि, सूरत -

पी.पी. सवानी ग्रुप द्वारा आयोजित "चुंदडी महियर की" विवाह समारोह का चौथा चरण आज शाम दुल्हन की विदाई के साथ संपन्न हुआ। पी.पी. सवानी चैतन्य विद्यासंकुल में अनाथ बेटियों के विवाह समारोह में दीप प्रकट हुआ जिसे कोरोना काल में गंगा का रूप धारण करने वाली बहनों के हाथों से करवाकर सामाजिक संदेश दिया गया। पी.पी. सवानी परिवार ने हर धर्म और जाति की बेटियों की शादी की व्यवस्था कर सामाजिक एकता की बेहतरीन मिसाल पेश की है।

विवाह समारोह में वे सभी पुत्रियाँ जिनका विवाह बिना पिता के हुआ हो, ससुराल के घर जा रही हैं, ऐसी बेटियों को उनके ससुराल वालो द्वारा शक्ति और लक्ष्मी स्वरूप मानकर पूजा किया गया। जिसमें पी.पी. सवानी ग्रुप के अतिथि श्री महेशभाई सवानी, श्री वल्लभभाई सवानी व मानवंता ने भाग लिया। बेटी ईश्वर की देन है। बेटी के जन्म के बाद से ही उसके परिवार को उसके घर संसार की चिंता सताने लगी है। दुर्भाग्य से ऐसी बेटियों के जीवन में जब करुणा अचानक उठती है और पिता का छाया गायब हो जाता है, तो अंधेरा छा जाता है। ऐसे समय में पिछले एक दशक से ऐसी बेटियों की धूमधाम से शादी कराना एक अद्भुत और संवेदनशील कार्य रहा है। इसी कड़ी में इस साल पी.पी. सवानी चैतन्य विद्या संकुल के पास "चुंदडी माहियर की" के नाम से 300 अनाथ बेटियों की शादी हुई. महेशभाई सवानी अब लगभग 5000 अनाथ बेटियों के पालक पिता के रूप में सभी जिम्मेदारियों को पूरा करते हैं।

शादी समारोह में स्वागत भाषण पीपी सवानी परिवार के श्री महेशभाई सवानी ने बेटियों का अमूल्य गौरव दिखाया। उन्होंने कहा कि बेटी और अगरबत्ती दोनों एक ही जैसे हैं, जो दूसरों के जीवन को सुगंधित बनाती हैं। पुत्री त्याग की मूर्ति है। उन्होंने ससुराल वालो से इन अनाथ बेटियों के माता-पिता बनने और उनके सपने को साकार करने का अनुरोध किया। उन्होंने बेटियों को मन लगाकर जीने की प्रेरणा देते हुए कहा, "बेटी, तुम तीन पीढ़ी की तारक हो।"

दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने आज अनाथ बेटियों का कन्यादान किया। इस मौके पर मनीष सिसोदिया ने कहा कि इस आयोजन और इस कार्य ने समाज के सामने पारिवारिक भावना, आपसी सद्भाव की बेहतरीन मिसाल पेश की है. देश भर में कई जगहों पर सामूहिक शादियां होती हैं लेकिन हर जगह यह एक समारोह या औपचारिकता की तरह है।आज मैंने जो देखा वह अभूतपूर्व है। जिन लोगों ने पिछले जन्म में कई अच्छे काम किए हैं, उन्हें यह काम करने का मौका मिलता हैं। उन्होंने दिल्ली सरकार और दिल्ली की जनता की ओर से शुभकामनाएं दीं.

आज के कार्यक्रम में आप नेता गोपाल इटालिया, इसुदान गढ़वी, मनोज सोरथिया जैसे कई नेता मौजूद थे. समाज के कई अग्रणियों के साथ आज के विवाह समारोह में डॉक्टर, सीए, वकील, पत्रकार जैसे कई आगेवान ने कन्यादान किया.

सूरत : तीन संतानों के पिता ने किशोरी को गर्भवती बनाया

कोर्ट ने किशोरी को दी गर्भपात की मंजूरी किशोरी की उम्र और गर्भ छोटा होने का कारण पेश किया गया

सूरत ।

सूरत में तीन संतान के पिता ने अपनी ही बेटी के साथ दुष्कर्म किया । जिसके बाद किशोरी गर्भवती बनी थी । अब सूरत जिला कोर्ट ने किशोरी को गर्भपात कराने की मंजूरी दे दी है । किशोरी की उम्र और गर्भ छोटा होने का कारण अर्जी में पेश किया गया । मिली जानकारी के अनुसार, सूरत के कीम क्षेत्र में रहते निलेश धुलीया ने अपनी निकट रहती १७ वर्षीय किशोरी को प्रेम के जाल में फंसाया था । यह किशोरी निलेश के जाल में ऐसी फंस गई थी कि, वह इसके साथ भागने के लिए तैयार हो गई थी । निलेश धुलीया के साथ निकलते समय किशोरी अपने घर से ४० हजार रुपया नकद, सोने की चेन तथा कई सामान लेकर निकलने की तैयारी में थी । अब उसके घर के सदस्यों के ध्यान में यह बात आई थी, जिसकी वजह से इसका पर्दाफाश हो गया था । दूसरी तरफ, निलेश धुलीया ने किशोरी को शादी की लालच दी थी । इसके बाद इसे छोड़ दिया था । इसके बाद किशोरी को पेट में दर्द हुआ था । इसके परिजनों ने इसकी मेडिकल जांच करने पर वह गर्भवती होने का सामने आया । जिसकी वजह से निलेश का पर्दाफाश हो गया था । किशोरी गर्भवती होने की जानकारी मिलने पर परिवार भी आश्चर्यचकित हो गया और पुलिस शिकायत की थी ।

जिसकी वजह से पुलिस ने किशोरी से पूछताछ के बाद निलेश की गिरफ्तारी की गई थी । इस जांच में खुलासा हुआ था कि, निलेश तीन संतानों का पिता है फिर भी किशोरी के प्रेम में पड़ गया था । एक तरफ, किशोरी १२ सप्ताह की गर्भवती थी । इसी वजह से इसके वकील द्वारा इसका गर्भपात कराने की मंजूरी मांगी गई थी । उन्होंने दलील दी थी कि, किशोरी की उम्र छोटी है, तथा गर्भ भी छोटा है । इसी वजह से गर्भपात की मंजूरी दी जाए । आखिर में दोनों पक्षों की दलील के बाद गर्भपात कराने की सूरत जिला कोर्ट द्वारा मंजूरी दी गई थी ।

ओमिक्रोन वेरिएंट से संक्रमित बुजुर्ग महिला ने ली थी चाइनीज वैक्सीन

राजकोट ।

दुनियाभर में ओमिक्रोन वेरिएंट को लेकर हाहाकार मचा हुआ है तब गुजरात सहित देशभर में कुल ४ केस दर्ज हुए हैं, जिसमें कर्नाटक के बाद गत दिन गुजरात और महाराष्ट्र में भी एक-एक केस दर्ज किया गया है । जामनगर में जिम्बाब्वे से आया ७२ वर्ष की बुजुर्ग महिला ओमिक्रोन से संक्रमित होने का जीनोम सिकवन्स की जांच में जानकारी मिली है । अब यह बुजुर्ग महिला ने कोरोना के खिलाफ लड़ने के लिए चाइनजी वैक्सीन लिए जाने की जानकारी मिल रही है । चाइना की कोरोना वैक्सीन के खिलाफ जो सवाल उठ रहे थे इस मामले में आशंका ज्यादा गहरी बन गई है, क्योंकि कोरोना से बचने के लिए जिम्बाब्वे की बुजुर्ग महिला ने चाइनीज वैक्सीन ली । हालांकि, इस मामले में अभी तक आधिकारिक पुष्टी नहीं हुई है । स्थानीय मीडिया रिपोर्ट में इस मामले की रिपोर्ट पेश की गई है । रिपोर्ट में यह भी सामने आ रहा है कि नए वेरिएंट ओमिक्रोन से संक्रमित जिम्बाब्वे से आई बुजुर्ग महिला के संपर्क में आये लोगों ने भारतीय वैक्सीन लिया है । जिनको कोरोना का संक्रमण नहीं लगा है । गुजरात में ओमिक्रोन का केस सामने आने के बाद स्थानीय प्रशासन, कलेक्टर और मुख्यमंत्री ने तुरंत रिव्यू मीटिंग बुलाकर जरूरी कदम उठाने के लिए आदेश दिए है । इसके अलावा विदेश से आते यात्रियों की ट्रेसिंग-ट्रेकिंग और टेस्टिंग का काम किया जा रहा है । इसके अलावा विदेश से आये यात्रियों के संपर्क में आये लोगों को भी ढूंढकर कोरोना के टेस्ट किए जा रहे है । इसके अलावा संदिग्ध मालूम होने पर यात्रियों के जीनोम सिकवन्स के लिए सैंपल भी भेजे जा रहे हैं । दूसरी तरफ भावनगर में एक ही दिन में ११ पॉजिटिव केस आने से लोगों में दहशत फैल गई है । सरकार द्वारा कोरोना के खतरा के बीच नियमों का सख्ती से पालन हो इसके लिए सूचना दी गई है । क्योंकि केस में कमी होने पर लोगों ने नियमों को नजरअंदाज कर दिया हो ऐसे रास्तों पर सार्वजनिक जगहों पर देखने को मिल रहा है ।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक: संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोन: 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)